भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 8 | अगस्त 2007 | अंक 8

किताबों की दुनिया

किताबों की दुनिया, किताबों की दुनिया
ये काँटों में खिलते गुलाबों की दुनिया
कठिन जिन्दगी को सलीके मिलेंगे
यहाँ जागने के तरीके मिलेंगे
यहाँ बोलने की रवायत पुरानी
यहाँ लोग क्यों होंठ सीके मिलेंगे
ये सच्चों की दुनिया, ये ख्वाबों की दुनिया।
कहानी मिलेगी, तराने मिलेंगे
यहाँ अच्छे अच्छे ठिकाने मिलेंगे
जिन्हें जानना है निहायत जरूरी
वो रस्ते बहुत से अजाने मिलेंगे
ये दुनिया नहीं है ख़राबों की दुनिया।
यहाँ पर तसव्वुर के ऊँचे किले हैं
यहाँ आके गौतम से गाँधी मिले हैं
यहाँ इल्म की बह रही गीत गंगा
अजब सिलसिले हैं, गजब सिलसिले हैं
ज्ञान की छलछलाती शराबों की दुनिया।
ये दुनिया हमारी तुम्हारी रही है
यही मीर तुलसी बिहारी रही है
वो गालिब के किस्से, निराला की बातें
यहाँ प्रेमचन्दजी की क्यारी रही है
ये बचपन, बुढ़ापे, शवाबों की दुनिया।
यहाँ हर उमर के खिलौने मिलेंगे
ज़मीनें मिलेंगी, बिछौने मिलेंगे
शिखर छू रहे से कथानक मिलेंगे
यहाँ वामनों जैसे बौने मिलेंगे
ये नंगी नहीं, है जुराबों की दुनिया।
यहाँ पर सवेरे नहीं आँख मलते
जुलूसों के सँग सँग हैं झरने उछलते
यहाँ हैं मशालें भी चेहरों सरीखी
यहाँ पर हैं चेहरे मशालों से जलते
सवालों से उगते जवाबों की दुनिया।

—**यश मालवीय,** इलाहाबाद

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन
यानी
हिन्दी का अन्तरराष्ट्रीय जलसा

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, अमेरिका के प्रमुख नगर न्यूयार्क में 13 से 15 जुलाई 2007 को सम्पन्न हुआ। विदेश राज्यमंत्री आनन्द शर्मा ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भारत से भेजे सन्देश में कहा—आज हिन्दी विश्व भाषा बन चुकी है, दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा में यह दूसरे स्थान पर है। दुनिया के एक सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई हो रही है। हिन्दी पाठ्यक्रम में प्रवासी भारतीय लेखकों का साहित्य भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये तथा जिन देशों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है उनके लिए मानक पुस्तक तैयार की जाये। हिन्दी को विश्व भाषा का दर्जा देने के लिए साफ्टवेयर, हार्डवेयर और सर्च इंजन तैयार करना चाहिए। किसी देश का आर्थिक विकास उसकी भाषा के विकास पर निर्भर करता है। अत: हिन्दी के विकास का स्पष्टत: प्रभाव हमारी आर्थिक उन्नति पर पड़ेगा। सरकार हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए प्रयासरत है। मारीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय स्थापित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने कहा—हिन्दी एक सौन्दर्य सौहार्द्र और समझ की भाषा है। यह विदेशों में रह रहे भारतीयों और विभिन्न देशों को जोड़ने में सेतु का काम करती है।

सम्मेलन में एक हजार से अधिक हिन्दीप्रेमी और विद्वान् सम्मिलित हुए। सम्मेलन में साहित्य अकादमी, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा तथा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति एवं राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। निजी स्तर पर हिन्दी के कतिपय प्रकाशक तथा अन्य हिन्दीसेवी भी सम्मेलन में उपस्थित रहे।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने हिन्दी का इतिहास पुस्तिका, बी०ए०, एम०ए० स्तर का अन्तरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया। समारोह में हिन्दी के अनेक विदेशी विद्वान् भी सम्मिलित हुए। भारत के सभी प्रदेशों से आये हिन्दी कर्मी तो थे ही, सूरीनाम, नेपाल, फिजी, गुयाना, मारीशस, यूरोप और अमेरिका के अनेक राज्यों से आए हिन्दीप्रेमी भी थे। इन देशों में भारतीय मूल के लोगों की बहुसंख्या होने के बावजूद हिन्दी को सरकार स्तर पर मान्यता प्राप्त नहीं है।

इन सबके बावजूद यह सम्मेलन विदेश विभाग द्वारा आयोजित एक जलसा मात्र बन कर रह गया। सरकारी अफसर और बाबू सारे समारोह में छाये रहे। उद्घाटन समारोह में अगली पंक्तियों में विदेश विभाग तथा अन्य अधिकारियों की ही उपस्थिति देखी जा सकती थी। अमेरिका में भारत के राजदूत के मुँह से हिन्दी के शब्द मुश्किल से निकल रहे थे। हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि तथा साहित्यकार सम्मिलित नहीं हुए। वरिष्ठ साहित्यकार केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, मंगलेश डबराल आदि अनेक प्रमुख साहित्यकार जो

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

सम्मानित किये जाने थे, सम्मिलित नहीं हुए। उनसे कहा गया—4200 रुपये का ड्राफ्ट पासपोर्ट के लिए बनवाइये और अमेरिकी दूतावास से इंटरनेट के जरिए वीसा के लिए आवेदन कीजिए। जबकि पहले सरकार यह सब अपने स्तर से करती थी। इसी से ज्ञात होता है कि सरकार अपने साहित्यकारों का कितना सम्मान करती है। क्या यह संवेदनहीनता हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा का स्थान दिला सकेगी। इसलिए केदारनाथ सिंह ने इस सम्मेलन को व्यर्थ और निष्प्रयोज्यपूर्ण कहा। अशोक वाजपेयी का कहना है—आयोजक गम्भीर नहीं हैं, सम्मेलन फिजूल खर्च है। मंगलेश डबराल के अनुसार—विश्व हिन्दी सम्मेलन एक तमाशा मात्र है। कवि सम्मेलनी कवियों और फिल्मी गीतकार गुलजार ने इस अंतरराष्ट्रीय जलसे को गुलजार अवश्य किया।

विदेश विभाग की दखल मुख्य रूप से अन्तरराष्ट्रीय राजनीति, उद्योग, व्यापार में होती है, भाषा और साहित्य उनका विषय नहीं है। ऐसे आयोजन का दायित्व देश की साहित्यिक संस्था को सौंपना चाहिए। महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, साहित्य अकादमी ऐसी संस्थाएँ सरकार के पास हैं जो हिन्दी के लिए अनेक वर्षों से कार्यरत हैं। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान विदेशियों को हिन्दी भाषा सिखाता है।

किसी देश में अपनी भाषा का प्रचार-प्रसार कैसे किया जाता है, यह विद्या हमने इतिहास से नहीं सीखी। भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार कैसे हुआ? अंग्रेजों ने ब्रिटिश कौंसिल के माध्यम से पुस्तकालय खोले, पाठ्य-पुस्तकें सुलभ करायीं। अमेरिका ने भारत के प्रमुख नगरों में पुस्तकालय खोले। द्वितीय युद्ध के बाद भारत के स्वतंत्र होने पर भारत में अंग्रेजी को बनाये रखने के लिए ब्रिटेन ने पाठ्य-पुस्तकों के सस्ते संस्करण उपलब्ध कराये। अमेरिका ने भारत में ही विविध विषयों के ग्रन्थ भारत में ही प्रकाशित कराकर अपनी विशिष्टता सिद्ध की। इन देशों ने भारत के विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों को अपनी पुस्तकें प्रदान की।

सारे विश्व में प्रवासी भारतीय जिनके पूर्वज किसी समय गिरमिटिया मजदूर बनकर गये थे क्या उन्हें हिन्दी की धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा ज्ञानवर्धक पुस्तकें प्रदान करने का कोई प्रयास किया गया। हिन्दी को विश्व में प्रतिष्ठापित करने की महत्वाकांक्षा है, क्या इसके लिए भाषाविदों और साहित्यकारों के सहयोग से कोई सार्थक योजना बनाई है। क्या कभी यह जानने की कोशिश की गई कि विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दी के पठन-पाठन में क्या मुश्किलें हैं। अपेक्षित पाठ्य-पुस्तकें हैं या नहीं। कैसी पाठ्य-पुस्तकें चाहिए?

प्रमुख नगरों में हिन्दी पुस्तकों के पुस्तकालय की क्या व्यवस्था है? उन पुस्तकालयों में हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों की रचना के साथ, इतिहास, संस्कृति की पुस्तकें भी होनी चाहिए। राष्ट्रसंघ में हिन्दी को मान्यता के लिए 95 देशों के समर्थन की आवश्यकता है। सर्वप्रथम उन देशों में कम से कम हिन्दी का एक समृद्ध राष्ट्रीय पुस्तकालय होना चाहिए, विशेषकर दूतावास और उससे संबद्ध कार्यालयों में। जिसमें हिन्दी की नवीनतम पुस्तकें और प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध रहें।

एक्ट के अनुसार प्रत्येक प्रकाशक चार राष्ट्रीय पुस्तकालयों को अपने नये प्रकाशन भेजता है, वहीं से उनका चयन कर पुस्तकें उन देशों के पुस्तकालयों को भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की रचनाओं के प्रकाशन की भी व्यवस्था होनी चाहिए। भाषा तथा साहित्य किसी देश की सभ्यता और संस्कृति का मर्म है। इसके लिए राजनीतिक सोच नहीं हार्दिक संवेदना की अपेक्षा है। दूतावासों के कर्मचारी तो परस्पर हिन्दी में वार्ता करें।

आशा है आगामी विश्व हिन्दी सम्मेलन के पूर्व इन पर विचार कर, इनका कार्यान्वयन किया जायगा। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

विदेशों में हिन्दी शिक्षण

1. पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय, 2. येल विश्वविद्यालय, 3. लोयोला, 4. शिकागो, 5. वाशिंगटन, 6. आयोवा, 7. ओरेगॉन, 8. कॉरनेल, 9. कोलम्बिया, 10. हवाई, 11. इलिनॉयस, 12. अलाबामा, 13. वर्जीनिया विश्वविद्यालय, 14. मिनेसोटा विश्वविद्यालय, 15. फ्लोरिडा वैदिक कॉलेज।

विश्व हिन्दी सम्मेलन का इतिहास

पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन
नागपुर, 10-14 जनवरी (1975)
दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन
मारीशस, 28-30 अगस्त (1976)
तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन
नई दिल्ली, 28-30 अक्टूबर (1983)
चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन
मॉरीशस, 2-4 दिसम्बर (1993)
पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन
त्रिनिदाद व टोबेगो, 4-8 सितम्बर (1996)
छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन
लन्दन, 14-18 सितम्बर, (1999)
सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन
सूरीनाम, 5-9 जून (2003)

संयुक्त राष्ट्र में स्वीकृत भाषाएँ

अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पेनी, रूसी, अरबी और चीनी।

संयुक्त राष्ट्र में इन भाषाओं के अनुवाद साथ-साथ उपलब्ध होते हैं। उपस्थित प्रतिनिधि हेडफोन की सहायता से अपनी भाषा में भाषण आदि सुन-बोल सकते हैं।

हम सब गिरमिटिए

हम सब नए गिरिमिटिए थे। पुराने गिरमिटिए मजदूर बनाकर ले जाए गए। नए गिरमिटिए खुशी खुशी जा रहे थे। इसके लिए बहुतों ने महीनों से मेहनत की थी। भागदौड़ की थी। 'बीज बिंदु पताका प्रकरी कार्य' किए थे। वीजा की फीजा दे, लाइन लगकर बनवाए थे। पैरवी कराई थी। तब जाके ये एक सुहागिन हिन्दी सुबह नसीब हुई थी। जलने वाले जल रहे थे, रोने वाले रो रहे थे, लेकिन जाने वाले जा रहे थे। हम जाने वाले नए हिन्दी नागरिक थे।

यह हिन्दी की एक उमस भरी सुबह थी, जो हवाई अड्डे के भीतर घुसते ही वातानुकूलित आरामदेह सुबह में बदल गई थी। पुराने गिरिमिटिए पानी के जहाज में गुलाम बनाकर ले जाए गए थे हम सब आजाद होकर अपने आप जा रहे थे। कुछ सरकारी मेहमान बनकर कुछ निजी पैसे के बल पर। पुराने गिरमिटियों को गन्ने की खेती करने को मिली। यहाँ अमेरिका हिन्दी की खेती करने को मिल रही थी। **—सुधीश पचौरी**

हिन्दी की जरूरत जोड़ने के लिए

देश तो भिन्न हो सकते हैं जैसे फूलों के रंग अलग होते हैं। इसी तरह हमारा स्नेह-सौहार्द, हमारी बन्धुता एक है और इसी कारण विदेश से इतने बन्धु आए हैं। हमारे प्रेम के कारण, हिन्दी प्रेम के कारण। भारत बड़ा राष्ट्र है और उसके एक-एक भूखण्ड में एक-एक देश हैं लेकिन बड़े राष्ट्र को जोड़ने के लिए हमको हिन्दी जरूरत है।

—महादेवी वर्मा

पाँच पाण्डवों की द्रौपदी

—पुरुषोत्तमदास मोदी

वाराणसी में राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के प्रथम दिवस श्रीमती महादेवी वर्मा ने पुस्तक को पाँच पाण्डवों की द्रौपदी संज्ञा से अभिहित किया और ये पाँच पाण्डव हैं—लेखक, प्रकाशक, मुद्रक, विक्रेता और पाठक। इन पाँच पाण्डवों की द्रौपदी बेचारी पुस्तक, कितनी दुर्दशा है आज इसकी। पंच-पाण्डवों की द्रौपदी का सम्मिलित उत्तरदायित्व ग्रहण करना आज सबका कर्त्तव्य है। लेखक, प्रकाशक, मुद्रक, विक्रेता और पाठक सभी पूरी ईमानदारी से अपना कार्य सम्पादन करें और पुस्तक रूपी द्रौपदी को प्रस्तुत करने में सम्मिलित योग दें। तभी हमारा देश सांस्कृतिक दृष्टि से स्वतंत्र हो सकेगा।

लेखक, प्रकाशक, मुद्रक, विक्रेता और पाठक ये सभी एक-दूसरे से परस्पर इतने संबद्ध हैं कि इनमें से एक को भी अन्य से अलग नहीं किया जा सकता और न उनकी स्वतंत्र सत्ता ही स्वीकार की जा सकती है। प्रचार के इस युग में लेखक की कृति समय के प्रवाह में उतर ही नहीं सकती, यदि प्रकाशक उसमें योग न दें; और मुद्रक जो कि कृति को वास्तविक रूप प्रदान करता है भली भाँति मुद्रण न करे, विक्रेता उसे ग्रहण कर पाठकों तक पहुँचाता है, और इन सबके मूल में स्थित ग्राहक रूपी पाठक है जिसकी पसन्द पर लेखक, प्रकाशक, मुद्रक, विक्रेता सभी आश्रित हैं। यदि पाठकों ने पुस्तक क्रय नहीं की तो सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाता है।

आज देश में स्थिति यह है कि लेखक लिखने के पहले ही चाहता है कि उसकी पुस्तक प्रकाशित हो जाय, उसे धन प्राप्त हो, यश प्राप्त हो। इस प्रकार की पूर्व कल्पना से ग्रस्त लेखक अपनी कृति प्रकाशक को देते समय पूर्ण ईमानदारी नहीं बरत पाते, फल होता है कि अति व्यस्त प्रकाशक जो इस देश में प्रूफ संशोधन से विक्रय तक सभी कार्य सम्पादन करता है, वह उस कृति के प्रकाशन में शीघ्र निर्णय नहीं ले पाता और जब लेखक के अतिशय तकाज़ों से परेशान हो उठता है तो या तो ज्यों की त्यों पाण्डुलिपि लेखक के हवाले कर देता है या प्रेस में मुद्रण के लिये भेज देता है, जबकि प्रेस को देने के पूर्व उसमें अनेक प्रकार के—भाषा की दृष्टि से, विषय की दृष्टि से और मुद्रण की दृष्टि से संशोधन एवं सम्पादन की आवश्यकता होती है। परिणाम यह होता है कि प्रूफ आने पर गाड़ी फिर अटक जाती है, प्रकाशक देखता है कि पाण्डुलिपि में तो अनेक अशुद्धियाँ हैं, उसका उत्साह हट जाता है और एक-दो फॉर्म कम्पोज होकर पुस्तक फिर पड़ी रह जाती है। लेखक से उसमें सुधार करने का अनुरोध किये जाने पर पहले तो वह किसी प्रकार के सम्पादन की आवश्यकता ही नहीं समझता, उसे अपनी मौलिकता बताता है और प्रकाशक यदि स्वयं सम्पादन कराता है तो उसे सम्पादक को भारी रकम देनी पड़ती है अत: ऐसी स्थिति में दो ही सूरतें होती हैं या तो कम्पोज किये हुए फार्म रद्दी कर दिए जाते हैं या पुस्तक अधिकांश अशुद्धियों सहित छप जाती है। पुस्तक छपने को छप गई, लेखक को प्रसन्नता हुई, प्रकाशक अब उसे निकालने की चेष्टा में परेशान होता है और पुस्तक न बिकने पर लेखक प्रकाशक एक दूसरे को दोष देते हैं, उधर बेचारा मुद्रक अलग खिन्न होता है कि उसे प्रूफ में की गई काँट-छाँट के कारण पुन: मेकअप कराना पड़ा। प्रकाशक के नाम अथवा पुस्तक के चटक-मटक आवरण जिसका प्रचलन हमारे देश में खूब हो गया है से आकर्षित हो विक्रेता उसकी कुछ प्रतियाँ मँगाता है और पाठक जब उनके पृष्ठ उलट कर ही रख देता है तो क्या स्थिति होती है। पारस्परिक आरोपों की परम्परा चल पड़ती है और पंच पाण्डवों के संघर्ष में द्रौपदी रूपी पुस्तक की अग्नि परीक्षा हो जाती है।

आजकल अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद हिन्दी में बहुत अधिक प्रकाशित होने लगे हैं। किन्तु उन अनुवादों को यदि ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय तो मूल से भी अधिक दुर्बोध लगते हैं। इनके अनुवादक भी अपने विषय के जानकार अध्यापक होते हैं और उनसे यदि कहा जाता है कि आप का अनुवाद स्पष्ट नहीं है, भाषा व्याकरण सम्मत नहीं है तो वे अनुवाद देखने के बजाय अपनी योग्यता की दुहाई देने लगते हैं और प्रकाशक को इस नीर-क्षीर के अधिकारी नहीं समझते। इस सम्बन्ध में मेरा तो कटु अनुभव है ही अन्य प्रकाशक मित्रों ने भी बताया है कि कितनी बार उन्हें छपे फर्मे रद्दी करने पड़े हैं और प्रथम अनुवादक को पारिश्रमिक चुका कर दूसरे अनुवादक को पुन: चुकाना पड़ा है।

दूसरी तरफ पाण्डुलिपि भाषा आदि की दृष्टि से प्रकाशित करने योग्य है तो मुद्रण की दृष्टि से उसके सम्पादन की आवश्यकता होती है, कहाँ किस प्रकार के टाइप लगने हैं, अध्याय के नाम, शीर्षक, उपशीर्षक, फुटनोट। अधिकांशत: हिन्दी प्रकाशकों के पास इस प्रकार के सम्पादन की व्यवस्था नहीं होती और मुद्रक की मर्जी पर ही यह महत्त्वपूर्ण कार्य छोड़ दिया जाता है। हिन्दी के मुद्रक जिन्हें सस्ती से सस्ती छपाई करनी पड़ती है वे पाण्डुलिपि सम्पादक की बात तो दूर रही अच्छे प्रूफ रीडर तक नहीं रख पाते, जिससे पुस्तक के प्रत्येक फार्म में समान स्थलों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के टाइप प्रयुक्त दीखते हैं।

अत: लेखक, प्रकाशक तथा मुद्रक तीनों अपनी सम्मिलित जिम्मेदारी समझें तो पुस्तक मुद्रण की दृष्टि से ही सही सफल हो सके। मुद्रक के साथ-साथ चित्रकार को भी स्मरण करना होगा। चित्र एक ओर पुस्तक को रूप प्रदान करते हैं और दूसरी ओर काले अक्षरों में मुद्रित भावों में रंग भरकर पाठक की दृष्टि को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। पुस्तक की रूप सज्जा इस दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य के लिए विख्यात चित्रकार उपयुक्त नहीं होते, इसके लिए व्यावसायिक चित्रकार (Commercial Artist) चुनने चाहिए जिन्हें ब्लाक बनाने तथा मुद्रण की समस्त पद्धतियों तथा अक्षरांकन (लेटरिंग) आदि का ज्ञान होता है, उन्हें पुस्तक पढ़ने को देकर लेखक प्रकाशक तथा चित्रकार सम्मिलित रूप से विचार विनिमय कर सकें तो पुस्तक में जान आ जाती है।

इन सबसे निकलकर पुस्तक विक्रेता के पास पहुँचती है, वह उसके मूल्य, विषय आदि पर विचार करते हुए उसके पाठकों पर विचार करता है और उसी दृष्टि से पुस्तक को अपनी दुकान में स्थान देता है, सजाता है। किन्तु हमारे देश में आज भी अधिकांश प्रकाशक तथा विक्रेता शिक्षा की दृष्टि से शून्य है और जिन्होंने शिक्षा प्राप्त की है वे भी इस दिशा में उदासीन हैं और शीघ्र धन प्राप्त करने की चिन्ता में भविष्य को ध्यान में न रख अपने व्यवसाय में स्थायित्व नहीं ला पाते और क्षणजीवी की भाँति उठते-गिरते रहते हैं।

पाठक की स्थिति यह है कि उसे इस बात की जानकारी ही नहीं हो पाती कि उसकी रुचि की कौन-सी पुस्तक प्रकाशित हुई है, विक्रेता उसे बता नहीं पाता, प्रकाशक उस तक अपनी सूचना नहीं पहुँचा पाता। सामान्यत: हिन्दी में एक पुस्तक के प्रकाशित होने के बाद डेढ़-दो वर्ष पाठकों को उसकी जानकारी होने में लग जाते हैं। हिन्दी प्रकाशक प्रचार में व्यय नहीं करते यदि करें भी तो ऐसे साधन नहीं हैं जिनके माध्यम से प्रत्येक पाठक को उनकी जानकारी कराई जा सके। दैनिक, साप्ताहिक पत्रों में विज्ञापन देना इतना महँगा है कि कोई प्रकाशक एक निश्चित सीमा के आगे व्यय नहीं कर सकता।

पुस्तक विक्रेता जिसकी दूकान चूँ-चूँ के मुरब्बे की तरह होती है वह हर पुस्तक की जानकारी नहीं रख पाता। शो केस की सुविधा उसके पास नहीं होती। ऐसी स्थिति में पुस्तक पाठकों तक कैसे पहुँचे।

दूसरी ओर हिन्दी प्रकाशकों में इतनी कट्टरता है कि वे पुस्तक के प्रचार में अन्य भाषाओं की सहायता नहीं ले पाते। हिन्दी भारतवर्ष की

राष्ट्रभाषा है, विश्व के प्रत्येक देश इसे मान्यता प्रदान कर चुके हैं, सभी देशों में इस भाषा का अध्ययन हो रहा है। उनमें सहज कुतूहल है कि हिन्दी में किस विषय की कौन-सी पुस्तक प्रकाशित हुई। वे हिन्दी नहीं जानते अत: वे अंग्रेजी में उसकी सूची तथा परिचय चाहते हैं पर वह उन्हें उपलब्ध नहीं होती। मेरे पास अमेरिका तथा इंग्लैण्ड के विश्वविद्यालयों के इस प्रकार की माँग आती है कि उन्हें अंग्रेजी में सूची बनाकर भेजी जाय ताकि उनका कार्यालय सुगमतापूर्वक उनका आर्डर भेज सके। यह कठिनाई हमारे देश में भी है। दक्षिण भारत के पुस्तक-विक्रेता हिन्दी की जानकारी न होने के कारण पुस्तकें नहीं मँगा पाते जबकि हिन्दी के पाठक आज सर्वत्र व्याप्त हैं। पुस्तकों में इनर टाइटिल के दूसरे पृष्ठ पर पुस्तक का नाम अंग्रेजी में दे देना चाहिए ताकि विक्रेता उसे ही पढ़कर पुस्तक का नाम आदि जान सके।

संक्षेप में अशिक्षा एवं ज्ञानान्धकार रूपी महाभारत पर विजय प्राप्त करने के लिए पंच पाण्डवों की पुस्तक रूपी द्रौपदी की रक्षा करें उसके सुन्दर, सुगढ़ एवं सजीव रूप की प्रतिष्ठा के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक, विक्रेता तथा पाठक सम्मिलित योगदान करें यही मेरा विनम्र निवेदन है।

(40 वर्ष पूर्व राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के अवसर पर लिखा गया)

आगामी प्रकाशन

स्वाधीनता के संघर्ष काल में गणेश शंकर विद्यार्थी क्रान्ति पुरुष थे। वे कलम और व्यक्तित्व द्वारा लड़ते-लड़ते अंग्रेजों की राजनीति में शहीद हो गये।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पे मरने वालों का यही बाकी निशां होगा

शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी के संघर्ष, बलिदान, जीवन दर्शन व राजनीतिक दूरदर्शिता पर गाँधी युग से लेकर वर्तमान समय के लगभग सौ विचारकों के दुर्लभ लेखों का संकलन

अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी

सम्पादक

एल. उमाशंकर सिंह

भूमिका की अपेक्षा क्यों ?

—जयशङ्कर प्रसाद

अनेक लेखक प्रसादजी से अपनी रचनाओं की प्रस्तावना या भूमिका लिखने का आग्रह करते थे। किन्तु प्रसादजी इसके विरुद्ध थे। 1933 में अज्ञेयजी ने जेल से जैनेन्द्रकुमार को लिखा कि प्रसादजी उनके काव्य-संग्रह पर प्रस्ताव के दो शब्द लिख दें। जैनेन्द्रजी का जब बनारस आना हुआ, वे इसी प्रयोजन से प्रसादजी के यहाँ पहुँचे। प्रसादजी के सामने 'भग्नदूत' की पाण्डुलिपि रख दी और कहा—मुद्दई जेल में है, खुद अपना मामले सामने नहीं रख सकते, इससे मेरी बात को दुगुना वजन समझें।

प्रसादजी ने पूछा—''कौन है ?''

जैनेन्द्रजी ने कहा—''मैंने कह दिया कि मैं आया हूँ। कह रहा हूँ, इसी से जान लीजिए।''

प्रसादजी बोले—''तुम कुछ चाहोगे, यह मैंने नहीं सोचा था, पर तुमने भी न सोचा होगा कि तुम कहोगे और 'प्रसाद' न कर पाएगा, पर विनोदशंकर व्यास को तो जानते हो, कितना निकट है ? कभी मैं उसके लिए भी कुछ लिखकर नहीं दे सका हूँ। अब तुम्हीं बताओ ?''

जैनेन्द्र ने कहा—''मुझसे न पूछिए, क्योंकि मेरा बताना एकदम आसान है। लीजिए बताता हूँ कि लिखना मान लीजिए और कुछ नहीं तो कारण यही कि अज्ञेय आपके लिए अज्ञात है जेल में है।''

प्रसादजी ने जैनेन्द्रजी को देखा और विवशता का भाव प्रकट करते हुए कहा—'जैनेन्द्र'।

प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' की कहानियाँ 'आज' में छपती थी, प्रसादजी प्रभावित थे। 'मुक्त'जी अपना कहानी-संग्रह प्रकाशित करवा रहे थे। उन्होंने प्रसादजी से 'दो शब्द' लिखने को कहा।

प्रसादजी ने कहा—''कहानी को भूमिका की अपेक्षा क्यों होनी चाहिये ? कहानी अगर अपने आप को स्वयं अभिव्यक्त नहीं कर सकती, तो वह और चाहे जो कुछ हो, कहानी नहीं है। आप तो बहुत अच्छी कहानियाँ लिखते हैं, उनकी भूमिका भला क्या हो सकती है ?

''किसी लेखक की रचना की भूमिका कोई अन्य व्यक्ति लिखे, यह बात मेरी समझ में नहीं आती। आखिर भूमिका लिखी क्यों जाती है ? मेरा विचार है कि किसी रचना को भूमिका की अपेक्षा तभी होती है, जब लेखक अपनी मूल संकल्पना से रचना का सूत्र जोड़ने का संकेत पाठक को देना चाहता है। यह तो स्वयं लेखक ही कर सकता है। किसी और व्यक्ति के लिए यह कैसे सम्भव हो सकता है ? लेकिन ऐसी भूमिका भी किसी जटिल या दुरूह विषय के लिए ही आवश्यक है—कविता-कहानी के लिए नहीं। दूसरों से भूमिका अक्सर इसलिए लिखवायी जाती है कि कोई जाना-माना व्यक्ति मेरी रचना की प्रशंसा करके पाठक को प्रभावित कर दे। मेरे विचार से यह तरीका अनुचित भी है और व्यर्थ भी क्योंकि भूमिका से प्रभावित होकर पाठक रचना को भी पढ़ेगा ही और यदि रचना, भूमिका के अनुरूप, प्रशंसनीय नहीं है तो वह भूमिका, रचनाकार के लिए और भूमिका-लेखक के लिए भी अप्रतिष्ठा का कारण बनेगी। इसके विपरीत, यदि रचना वस्तुत: श्रेष्ठ और प्रशंसा योग्य है तो उसे भूमिका-लेखक की दलाली की जरूरत क्यों हो ? पाठक रचना पढ़ेगा, मुग्ध होगा और स्वत: उसे सराहेगा। आपने मेरी किसी पुस्तक में किसी अन्य व्यक्ति की लिखी भूमिका देखी है ? मैं चाहता तो क्या बड़े-से-बड़े व्यक्ति से अपनी पुस्तकों की भूमिका नहीं लिखवा सकता था ? लेकिन मैंने ऐसा कभी नहीं किया। मैं इसे अनुचित समझता हूँ। मैं स्वयं भी अपनी पुस्तकों की भूमिका नहीं लिखता, क्योंकि वह अनावश्यक है। हाँ, अपनी कुछ पुस्तकों में वैदिक, पौराणिक या ऐतिहासिक कथा-सूत्र का संकेत देने के लिए या विचार-सरणि के स्पष्टीकरण के लिए मैंने कुछ शब्द अवश्य लिखे हैं। वैसे प्रसंगों में लेखक को इस दायित्व का निर्वाह स्वयं करना चाहिये। वस्तुत: वही यह काम कर भी सकता है।''

मुक्तजी ने अन्तिम प्रयास स्वरूप अनुरोध किया—''मैं बड़ा विश्वास लेकर आपके पास आया था। आपने मेरी कहानियों की प्रशंसा की थी। यदि आप कुछ शब्द लिख देंगे तो मेरी कहानियों का गौरव बढ़ेगा।''

प्रसादजी ने कहा—''क्षमा कीजियेगा, मैं यह बात नहीं मानूँगा। आपका गौरव आपकी कहानियों से ही बढ़ सकता है, मेरे लिखने से नहीं। मैं जानता हूँ कि मेरी अस्वीकृति से आपको कष्ट हो रहा है। आप विश्वास मानें, बार-बार आपके आग्रह को अस्वीकार करने में मुझे उससे भी अधिक कष्ट हो रहा है। फिर भी मैं भूमिका नहीं लिखूँगा। आपकी उम्र अभी थोड़ी है। मैं हितैषी के रूप में, बड़े भाई के रूप में, आपको ग़लत राह पर जाने की सलाह नहीं दूँगा। उसमें सहयोग तो बिल्कुल नहीं दूँगा। मैंने आज तक कभी किसी की भी पुस्तक की भूमिका नहीं लिखी। शायद लिखूँगा भी नहीं। लेकिन मैं आपको वचन देता हूँ, यदि किसी दिन मेरा मत-परिवर्तन हुआ, मैंने भूमिका लिखने का निर्णय किया तो पत्र लिखकर पहले आपको बुलाऊँगा और सबसे पहली भूमिका आप की पुस्तक की ही लिखूँगा। सम्भव है, अभी आपको मेरी यह बात अप्रिय लगे, लेकिन भविष्य में कभी आप मेरी बात का औचित्य समझ पायेंगे।'' **—पु.दा. मोदी**

'निराला' द्वारा मायावती की जीत की भविष्यवाणी 75 वर्ष पूर्व

—कान्तिकुमार जैन

उत्तर प्रदेश के हाल में हुए विधानसभा चुनावों ने समाजवादी दल के सारे समीकरण गड़बड़ा दिए और भाजपा एवं कांग्रेस जैसी पार्टियों को कहीं का नहीं छोड़ा। मायावती के नेतृत्व में बसपा ने ऐसा निर्बाध बहुमत प्राप्त किया है, जिसका आभास मीडिया को भी नहीं था। मीडिया की भविष्यवाणियाँ बेहद मीडियाकर साबित हुईं। मायावती का अब यह रुतबा है कि भारत के राष्ट्रपति के चुनाव में उनकी भूमिका निर्णायक मानी जा रही है और यह भी कहा जाने लगा है कि मायावती के लिए दिल्ली दूर नहीं है। मायावती के बहुजनों की जीत क्या सचमुच अप्रत्याशित है? केवल राजनीति और सर्वेक्षणों पर भरोसा करने वालों के लिए होगी, पर साहित्य और इतिहास का अध्ययन करने वालों के लिए यह अनपेक्षित भी नहीं है। मैं किसी और की बात नहीं जानता, पर हिन्दी के युगान्तरकारी कवि और उपन्यासकार सूर्यकान्त त्रिपाठी की बात जरूर जानता हूँ। 1933 में ही 'निराला' समझ गए थे कि ''अछूत ही आज भारत के प्रथम गण्य मनुष्य हैं।'' 'सुधा' के जून 1933 के अंक में उन्होंने लिखा—''जिस शूद्रक को एक दिन सामाजिक नियमों के लंघन के कारण अवतार श्रेष्ठ भगवान श्रीराम के हाथों प्राण देने पड़े थे, जिस एकलव्य को गुरु की मिथ्या तृप्ति के लिए अँगूठा काटकर देना पड़ा था, क्या आर्य सभ्यता का पक्षपाती कोई भी मनुष्य कह सकता है कि भारत में आज भी वैसा ही वर्णधर्म प्रचलित है अथवा उसी के प्रचलन की जरूरत है? वही शूद्रक शक्ति आज सहस्र-सहस्र रामचन्द्रों को पराजित कर देने में समर्थ है—अछूत ही आज भारत के प्रथम गण्य मनुष्य-चिन्त्य समस्या हैं।''

'निराला' जिसे शूद्रक शक्ति कह रहे हैं—वह आज के भारत में बहुजन शक्ति है—अछूतों का ही नया राम आज की शब्दावली में दलित है, वे अपने इस निष्कर्ष तक अचानक ही नहीं पहुँचे। बिना नाम लिए किन्तु प्रेमचंद को लक्ष्य कर उन्होंने लिखा था कि ''हिन्दी में जो सबसे बड़े औपन्यासिक हैं, उन्होंने भी युग-प्रवर्तन करने वाली रचनाएँ नहीं दीं, युग के अनुकूल रचनाएँ की हैं—प्राय: आदर्श का पल्ला नहीं छोड़ा'' किन्तु अगस्त 1930 की 'सुधा' के सम्पादकीय में वे प्रेमचंद का नाम लेकर अपनी शिकायत दर्ज कर रहे हैं। शिकायत ही दर्ज नहीं कर रहे, 'कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा' जैसे उपन्यासों में शूद्रक शक्ति के सम्बन्ध में युग-प्रवर्तन करने वाली रचनाएँ दे रहे हैं। इन उपन्यासों में वे दलित-चेतना के अग्रिम दस्ते के रूप में कार्य कर रहे हैं।

'निराला' अपने उपन्यासों के राडार पर 1939 में ही बीसवीं शताब्दी के लोकतंत्रीय भारत में सम्भावित दलित कंपनों को रिकार्ड करने में सफल हुए थे। कविता में 'ज्योति की तन्वी' के स्थान पर 'कुकुरमुत्ता' उन्हें अच्छा लगने लगा था। 'कुल्लीभाट' निराला के उपन्यासों का कुकुरमुत्ता है, 'कुल्लीभाट' हिन्दी का पहला पिकरेस्क उपन्यास है। पिकरेस्क यानी समाज के उच्छिष्ट, उपेक्षित माने जाने वाले पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधि। मायावती ने अगड़ी और पिछड़ी जातियों के समन्वय से जो राजनीतिक रसायन तैयार किया, उसका संकेत हम कुल्लीभाट में देख सकते हैं। कुल्लीभाट में अगड़ी जाति के प्रतीक स्वरूप 'निराला'जी का भी चरित्र आया है और जैसा कि स्वयं 'निराला'जी ने स्वीकार किया है 'कदाचित अधिक विस्तार पा गया है।' कुल्लीभाट ने अपने मकान में अछूत पाठशाला खोल रखी है। तीस-चालीस लड़के आते थे—धोबी, डोम, पासियों के।

पेड़ के नीचे टाट बिछाकर कुल्ली ने अपने मकान को 'क्रान्ति निकेतन' बना दिया है। 'निराला' को कुल्ली की लगन देखकर लगता है कि 'कुल्ली धन्य है। वह मनुष्य है। इतने जंबुकों में वह सिंह है। हिन्दू समाज ने जिनको इतना अधम बनाया है, कुल्ली उन्हें मनुष्य बना रहा है।' 'निराला' मनुष्य से एक दर्जा नीचे रहने वालों का दर्द समझते थे। आधुनिक हिन्दी में 'निराला' दलित चेतना के पहले प्रवक्ता हैं।

मायावती, अम्बेडकर और मान्यवर कांशीराम को तो जानती हैं, उन्हें 'निराला' को भी जानना चाहिए, 'निराला' भले ही जन्मना दलित न हों पर उन्होंने दलितों जैसा जीवन जीना स्वत: ही स्वीकार किया था। बिना दलित हुए भी मनुष्य दलितों के साथ हो सकता है, मायावती ने उत्तर प्रदेश का चुनाव जीतकर भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी है। इस नई दिशा के दूरगामी परिणाम होंगे—सामाजिक क्षेत्र में भी और राजनीतिक क्षेत्र में भी। मायावती को इन सभी सम्भावनाओं का दोहन करना चाहिए।

भारत कला भवन की कथा

1921 के उत्तरार्ध में रायकृष्णदासजी ने कला परिषद् के लिए मूर्ति-संग्रह आरम्भ किया। शुरू किया नगर के घाटों से। बिखरी पड़ी मूर्तियाँ नाव पर लाद कर ले आते और रामघाट स्थित अपने मकान में एकत्रित करते। इसके उपरान्त काशी के धार्मिक, ऐतिहासिक पंचक्रोशी मार्ग—पचीस कोस में विस्तृत मार्ग पर छोटे-छोटे प्राचीन मन्दिरों पर दृष्टि डाली जिन्हें पण्डे-पुजारी देखते थे। उनमें संग्रहणीय प्राचीन मूर्ति की पहचान की, पण्डे पुजारी को पुरानी दो नई लो की तर्ज पर समझाया। यह टूटी-फूटी पुरानी मूर्ति क्या करोगे, संगमरमर की यह नई मूर्ति लो, जयपुर की बनी, सुनहले काम की। पण्डे, पुजारियों की बात जँच गई, इस प्रकार प्राचीन मूर्तियाँ प्राप्त की, उन्हें कुछ दक्षिणा भी दी। इस प्रकार कला परिषद का आरम्भ हुआ जो आज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विख्यात भारत कला भवन है।

एक बार तो जयशङ्कर प्रसादजी ने पिटने से बचा लिया।

बनारस में एक सुनसान सड़क पर एक सुन्दर जल से पूर्ण तालाब था, सम्भवत: रामनगर का तालाब रहा होगा। तीन तरफ पक्का घाट, चौथी ओर गौर घाट। बड़ा ही रमणीय स्थल, लोग सैर-सपाटे और दाल बाटी के लिए आते थे।

विक्टोरिया फिटन से दो युवक पहुँचे—एक रायकृष्णदास दूसरे जयशङ्कर प्रसाद। राय साहब चारों तरफ निगाह डाल अपने मतलब की चीज निहारते-तलाशते रहे। पेड़ों के नीचे टूटी-फूटी मूर्तियाँ पड़ी थीं। राय साहब उन्हें बड़ी बारीकी से परखते रहे। जाड़े के दिन थे, राय साहब शाल ओढ़े थे, चुपके से एक मूर्ति उठाकर शाल में दबा ली।

उधर वह पुजारी राय साहब की हरकत देख रहा था और उनकी ओर बढ़ने को था कि प्रसादजी ने उसे अपने पास बुलाया, उसे चाँदी का एक सिक्का दिया और उस स्थान की ओर उसकी सराहना में उसे फँसाये रखा। इतनी देर में राय साहब शाल में मूर्ति छिपाये आये और फिटन पर बैठ गये। प्रसादजी ने पण्डितजी को प्रणाम किया और कोचवान से कहा—गाड़ी बढ़ाओ। कोचवान ने लगाम हिलाई और घोड़ा सरपट नौ दो ग्यारह।

प्रसादजी यदि उस समय न होते तो शायद राय साहब की भद्रा उतर जाती।

आलोचना की भाषा सर्वग्राह्य होनी चाहिए : नामवर सिंह

जीवन के ८० वर्ष पूरे होने पर नामवर सिंह का काशी में हुआ सम्मान

भाई रामजी सहित अस्सी का काशी, काशी का नामवर प्रणाम करता है

पंत पर विवादास्पद टिप्पणी के बाद इस बार काशी में नामवर सिंह कुछ सतर्क तो दिखे ही, पिछले दिनों की घटनाओं से मर्माहत भी लग रहे थे। जीवन के अस्सी वर्ष पूर्ण करने पर वे 28 जुलाई को अपने जन्मदिवस पर बीएचयू के कला संकाय सभागार में अपनी प्रशंसा-अनुशंसा के कसीदे काढ़ने वालों को टोकते हुए कहे कि यहाँ इस मंच से सिर्फ वैसी ही बातें हों जिससे हम और आप कुछ सीख सकें, हवाई बातों की कोई जरूरत नहीं है। डॉ० सिंह प्रगतिशील लेखक संघ और बीएचयू के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित 'अस्सी के नामवर' अभिनन्दन समारोह में वक्तव्य दे रहे थे।

आजकल लिखी जा रही समालोचनाओं की भाषा से असन्तुष्ट नामवर सिंह ने कहा कि अब आलोचना कर्म में प्रयुक्त भाषा को आम लोगों लायक होना होगा। अन्य रचनाओं की तरह ही चलकर आलोचना सर्वग्राह्य व लोकोन्मुखी हो सकती है। हिन्दी पट्टी का कल्याण भी इसी में निहित है। उन्होंने प्रकारान्तर संस्कृतनिष्ठ व क्लिष्ट शब्दों को आज के सन्दर्भों में परिहार्य बताते हुए अपने मित्र-पत्रकार प्रभाष जोशी की भाषा-लिपि को सराहा और प्रश्न किया कि क्या आलोचना की भाषा प्रभाष जोशी के लेखों की तरह नहीं हो सकती? अपने अभिनन्दन के पश्चात नामवर सिंह 'आलोचक का धर्म' विषय पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आज आलोचकों की भीड़ है, वे व्यग्रता में सब कुछ लिख डालना चाहते हैं। सभी आलोचक पूरा परिदृश्य या साहित्य का इतिहास ही लिखने की चेष्टा करते हैं, जबकि उन्हें टुकड़े-टुकड़े में लिखना चाहिए। किसी कवि की एक कविता पर लिखें तो बेहतर लिख पायेंगे।

श्री सिंह ने कहा कि विमर्श व वाद ने आलोचना को प्रभावित किया है। साहित्य का सच हमेशा शब्दों के माध्यम से उजागर होता है जो असल में आभासी सच होता है, अत: विचारों-वादों से चिपके रहने के बजाय अपने को लगातार परिमार्जित करते रहना चाहिए। इसी बहाने उन्होंने कहा कि वाल्मीकि के राम आभासी सत्य हैं, सत्य नहीं। अपने भाषण के दौरान नामवर सिंह ने तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल व डॉ० रामविलास शर्मा के सकारात्मक पक्षों की बार-बार प्रशंसा की। तुलसीदास पर तो पुस्तक लिखने की भी इच्छा जाहिर की। उन्होंने कहा कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और रामविलास शर्मा की भी आखिरी इच्छा तुलसी पर पुस्तक लिखने की थी।

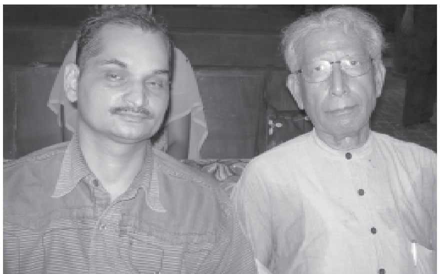

नामवर की धरती के लेखक (पहरुवा)
श्रीप्रकाश शुक्ल के साथ नामवर सिंह

पिछले दिनों हुए पंत विवाद का बिना जिक्र किये नामवर सिंह ने सांकेतिक ढंग से विरोधियों के लिए कई सन्देश प्रेषित किये। शायद उन्हें भास था कि इस समारोह में मुखर विरोधियों के अनेक जासूस भी मौजूद हैं। गम्भीर होकर उन्होंने अज्ञेय की एक कविता 'नाच' का पाठ तो किया ही उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि दो बाँस के बीच तनी रस्सी पर नाचने वालों जैसा ही हाल आलोचकों का होता है। एक बाँस 'पाठक' होता है तो दूसरा बाँस 'कविता' या 'कृति', बीच में नाचने वाले पर जो रोशनी पड़ती है वह मीडिया की होती है। नर्तक जिस तनाव को झेलता है वही तनाव मेरे जैसे समालोचक भी झेलते हैं।

बीएचयू हिन्दी विभाग के श्रीप्रकाश शुक्ल की पुस्तक '*नामवर की धरती*' का लोकार्पण प्रलेस के महासचिव प्रो० कमला प्रसाद ने किया। इस कृति पर मंचासीन लगभग सभी विद्वानों ने अपना मत व्यक्त किया, वहीं आशीष त्रिपाठी व विनोद मिश्र ने समीक्षात्मक विचार रखे। नामवर सिंह को सम्मानित करने वाले प्रो० चन्द्रबली सिंह ने अपने और नामवरजी से जुड़े संस्मरणों को सुनाया और नामवर सिंह से डॉ० रामविलास शर्मा के बाबत पुनर्मूल्यांकन की माँग करते हुए कहा कि डॉ० शर्मा को इतना पीछे न ठेल दिया जाय कि उनकी जयन्ती केवल पाञ्चजन्य के दफ्तर में मनायी जाय।

सम्मान सत्र की अध्यक्षता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी व संचालन संजय ने किया जबकि दूसरे सत्र में अध्यक्ष नामवर सिंह व संचालक श्रीप्रकाश शुक्ल रहे। स्वागत प्रो० कुमार पंकज व धन्यवाद ज्ञापन प्रो० चौथीराम यादव ने किया। आयोजन में भिन्न-भिन्न शहरों से आये साहित्यकारों ने वक्तव्य दिया और पूरे आयोजनकाल तक कला संकाय बीएचयू का सभागार खचाखच भरा हुआ था।

—एल. उमाशंकर सिंह

आगामी प्रकाशन

स्वनामधन्य लेखक-विचारक व राजनेता
हृदयनारायण दीक्षित के चुने हुए
महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह

सांस्कृतिक अनुभूति के राजनीतिक प्रतीक

सम्मान-पुरस्कार

ब्रिटिश संसद में दो भारतीय को साहित्य सम्मान

ब्रिटिश संसद के ऊपरी सदन हाउस ऑफ लार्डस् में आयोजित एक समारोह में 13वें अंतरराष्ट्रीय 'इंदु शर्मा कथा सम्मान से' युवा भारतीय लेखिका महुआ माजी को सम्मानित किया गया। 20 जुलाई 2007 को आयोजित इस समारोह की विशेषता थी ब्रिटेन के आंतरिक सुरक्षा मंत्री टोनी मैक्नल्टी द्वारा हिन्दी में भाषण देते हुए कार्यक्रम की शुरुआत और इस समारोह में ब्रिटेन में बसे हिन्दी लेखकों को दिया जाने वाला आठवाँ पद्मानंद साहित्य सम्मान डॉक्टर गौतम सचदेव को दिया गया।

भाषण में मैक्नल्टी ने कहा कि आतंकवाद से मुकाबला कर रही इस दुनिया में एक दूसरे को समझने के लिए आपसी संवाद बेहद जरूरी है।

कछु भाखे बनै न बनै भाखे

सितम्बर 1920, वाराणसी का टाउनहाल मैदान, वृहत प्रदर्शनी, प्रदर्शनी में कवि सम्मेलन, अध्यक्ष श्री किशोरीलाल गोस्वामी।

सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल के विद्यार्थी—'उग्र' (पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र') स्कूल में हेडमास्टर गुरु सेवक उपाध्याय। 'उग्र' के लम्बे-लम्बे बाल। हेड मास्टर ने कहा बाल कटवाओ नहीं रिस्टीकेट। मनहूस बाल कटवाया।

कवि सम्मेलन में समस्या रखी गई—'भाखे बनै न बनै बिनु भाखे'।

'उग्र' ने एक कविता पढ़ी जिसका अन्तिम चरण था—

हा गुरुसेवक की करनी
कुछ भाखे बनै न बनै भाखे।

यह सुनना था कि कवि सम्मेलन में हंगामा हो गया। कवि सुकवि मुकुन्दीलाल भी उपस्थित थे, जिनकी रचनाएँ थीं—'देवी पैज' और 'मुकुन्द विलास'। जयशङ्कर प्रसादजी ने उनसे भी समस्या पूर्ति करने को कहा, वे लिखकर भी लाए थे, किन्तु हंगामा देखकर खिसक गये।

दो दिन बाद मुकुन्दीलाल पधारे तो प्रसादजी ने यह भड़ौवा सुनाया—

दिन तीस द्वैक कवित्त रचे,
अरु ताहि सुनावन को अभिलाखै।
कवि वृन्द की ओज भरी कविता
सुनि गो जन के लगे छूटे, पटाखे॥
गुम हैं दुम दाबिके बेगि भज्यो,
सिगरी कविताई परी रही ताखे॥
कवि लाल मुकुन्द भी देखि दशा
वह भाखे बनै न बने बिनु भाखै॥

कथन

अखबार के मुखपृष्ठ पर आमतौर पर हत्या, बलात्कार, चोरी और हिंसा की खबरें होती हैं। सुबह की शुरुआत ऐसी खबरों से होना सही नहीं है। खबरें ऐसी होनी चाहिए जो लोगों में उत्साह भर सकें और उनके जीवन में मुस्कान भर सकें।

—एपीजे अब्दुल कलाम

भारतीय जीवन दर्शन

आज व्यक्ति और उसके संस्थानों को प्रगति और प्राकृतिक सम्पदा के बीच सन्तुलन, समन्वय और आध्यात्मिक सम्बन्धों की आवश्यकता है। भारत का प्राचीन ज्ञान सुधार के लिए निःसंदेह उपयोगी मदद कर सकता है। प्रारम्भ से ही हमारे संत-महात्मा यह उद्घोषित करते रहे हैं कि मानव और प्रकृति अलग-अलग इकाई नहीं हैं, बल्कि वे एक ही परिवार का हिस्सा हैं। उन्होंने बताया कि प्रकृति के मूलभूत तत्त्वों में पर्वत, पृथ्वी, समुद्र, वायु और आग शामिल हैं। चार हजार साल पहले ही वेदों में जो संदेश दिया गया उसे ही आज टिकाऊ विकास की संज्ञा दी जा रही है। वनीकरण तथा वनों का संरक्षण हमारी प्राचीन सभ्यता में पवित्र दायित्व बताया गया है। आज के भारत ने इस सबको भुला दिया है—प्राचीन सभ्यता की उस अंतर्दृष्टि को भी जिसने सभ्यताओं के विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार को यह लिखने के लिए प्रेरित किया था कि इस बेहद खतरनाक समय में मानवता के कल्याण का यदि कोई मार्ग है तो वह भारतीय जीवन दर्शन ही है।

■ ■ ■

इतिहास अपनी जगह है, लेकिन आपातकाल और उसके बाद की घटनाओं का विश्लेषण करते हुए एक सवाल उभरता है कि जब कमजोर नैतिक बल वाले राजनेताओं, नौकरशाहों, न्यायाधीशों और मीडिया कर्मियों की इतनी बड़ी संख्या है तब सुशासन की स्थापना कैसे की जा सकती है? महान राष्ट्रों का निर्माण मजबूत चरित्र वाले लोगों तथा उनकी प्रतिबद्धता द्वारा किया जाता है, न कि उनके द्वारा जिनका नैतिक बल काँच जैसा नाजुक हो।

—जगमोहन, पूर्व केन्द्रीय मंत्री

उच्च शिक्षा को गति

अभी देश में विश्वविद्यालयों की कमी है, लेकिन उच्च शिक्षा को गति देने में सरकार तेजी से पहल कर रही है। 30 केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोले जाने की योजना से यह कमी काफी हद तक दूर होगी। वैसे 16 राज्य जहाँ केन्द्रीय विश्वविद्यालय नहीं हैं, वहाँ इनकी व्यवस्था जल्द की जाएगी। यहाँ की शिक्षा विश्वस्तरीय होगी। फिर शैक्षिक तौर पर पिछड़े 355 जिलों को चिह्नित कर वहाँ कॉलेज खोले जाने की योजना है। कई तकनीकी व व्यवसायिक संस्थान खोले जाने पर भी विचार चल रहा है। वैसे गौर करने वाली बात है कि मामला सिर्फ विश्वविद्यालयों की कमी का नहीं बल्कि वहाँ शैक्षणिक गुणवत्ता व सुविधाओं की कमी का भी है। अभी देश के दो तिहाई विश्वविद्यालय और 90 प्रतिशत कॉलेजों का शैक्षिक स्तर काफी नीचे है। जाहिर है इन्हीं कारणों से देश के कुछ गिने चुने विश्वविद्यालय में एडमिशन के लिए आपाधापी मची रहती है। यूजीसी, केन्द्रीय व राज्यस्तरीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के सीटों में वृद्धि की पहल कर रही है। मौजूदा पंचवर्षीय योजना 2007-12 में यूजीसी ने उच्च शिक्षा के लिए कई लक्ष्य रखे हैं। इसमें उच्च शिक्षा के लिए छात्रों की संख्या में वृद्धि व देश के सभी क्षेत्रों में विश्वविद्यालय शिक्षा की व्यवस्थ शामिल है।

—सुखदेव थोराट, अध्यक्ष यू.जी.सी.

पी०सी० जोशी की याद

तुम्हारी याद के जब जख्म भरने लगते हैं, इसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं।

विचारों की क्रान्ति के द्वारा ही राजनीतिक क्रान्ति हो सकती है। जब तक इंसान के विचारों में बदलाव नहीं होगा, देश में बदलाव नहीं हो सकता। कम्युनिस्ट नेता और संस्कृतिकर्मी पीसी जोशी इसे जानते थे और इसी कारण उन्होंने राजनीतिक क्रान्ति को आर्थिक लड़ाई नहीं बनने दिया बल्कि सांस्कृतिक चेतना को समझते हुए मनुष्य की सम्पूर्ण मुक्ति का प्रयास किया। इसी कारण उन्होंने संस्कृति को राजनीति का हथियार बनाया।

राम और रावण के युद्ध में जब राम द्वारा रावण पर चलाए गए तीर विफल हो रहे थे तो वे निराश हो गये। ऐसे में जामवन्त ने उन्हें बताया कि राम को उस आदि शक्ति को पहचान कर उसकी आराधना करनी चाहिए जो रावण की रक्षा कर रही थी। पीसी जोशी ने इस शक्ति को साहित्य-संस्कृति की शक्ति के रूप में पहचाना था। उन्हीं की प्रयासों और प्रेरणा से कितने ही साहित्यकार, संगीतकार, नाट्यकर्मी कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े। उसी पार्टी ने भुला दिया जिसे उन्होंने स्थापित किया। अपनी पाटी में उन्हें तब विरोध भी झेलना पड़ा जब उन्होंने यह कहा कि आजादी अधूरी भले हो लेकिन यह झूठी नहीं है।

—नामवर सिंह

भूल सुधार

'भारतीय वाङ्मय' के जुलाई 2007 अंक में, पृष्ठ 15 पर **पढ़ते रहो बढ़ते रहो** कविता की अन्तिम 7 पंक्तियाँ **सफदर हाशमी** की हैं न कि गिरीश पंकज की। इस भूल के लिए खेद है।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

बेरूत

वर्ल्ड बुक कैपिटल 2009

नई दिल्ली और एम्सटर्डम के बाद अब बेरूत वह शहर है जिसने किताबों के शौकीनों के मन पर एक श्रेष्ठ प्रभाव छोड़ा है। किताबों और अध्ययन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यूनेस्को ने वर्ल्ड बुक कैपिटल 2009 के रूप में बेरूत को चुना है। पेरिस स्थित यूनेस्को मुख्यालय में हुई चयन समिति की बैठक में कहा गया कि सांस्कृतिक विविधता, संवाद और सहनशीलता पर फोकस करने के कारण लेबनान की राजधानी बेरूत को नामांकित किया गया।

बेरूत से पहले वर्ल्ड बुक कैपिटल घोषित किए जाने वाले शहरों में मैड्रिड (2001), अलेक्जेंड्रिया (2002), नई दिल्ली (2003), एडवर्प (2004), मोंट्रियाल (2005), ट्यूरिन (2006), बोगोटा (2007) और एम्सटर्डम (2008) शामिल हैं।

पूर्व राष्ट्रपति कलाम अध्यापन के लिए लौटेंगे

राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद से सेवामुक्त होने के बाद डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई में अध्यापन करेंगे। जाने-माने मिसाइल वैज्ञानिक डॉ० कलाम राष्ट्रपति पद से सेवामुक्त होने के बाद यहाँ पहुँचेंगे और विश्वविद्यालय परिसर में ठहरेंगे। परिसर में उनके लिए एक अतिथि कक्ष तैयार किया गया है।

डॉ० 'मानव' का साहित्य इंटरनेट पर

हिसार के प्रमुख साहित्यकार डॉ० रामनिवास 'मानव' के सम्पूर्ण साहित्य को विश्व के दो सौ से भी अधिक देशों में फैले करोड़ों हिन्दी-भाषियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से, अमरीका में 'मानव भारती डॉट गूगल पेजिज डॉट काम' नामक वेबसाइट लांच की गई है। वेबसाइट पर प्रथम चरण में, डॉ० 'मानव' के संक्षिप्त परिचय के साथ उनकी सोलह पुस्तकें उपलब्ध करवाई गई हैं, जिनमें आठ काव्यकृतियाँ, चार बालगीत-संग्रह, दो लघुकथा-संग्रह तथा दो शोध-प्रबन्ध शामिल हैं।

गाँधी विद्या संस्थान

लोकनायक जयप्रकाश द्वारा राजघाट, वाराणसी में स्थापित गाँधी विद्या संस्थान हाईकोर्ट के आदेशानुसार लगभग चार वर्ष बाद रविवार, 15 जुलाई 2007 को मुक्त हुआ और सुचारु संचालन आरम्भ हुआ। गाँधी दर्शन पर शोध तथा गाँधीवाद के प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित यह संस्थान विवादग्रस्त था। संस्थान की निदेशक प्रो० कुसुमलता केडिया के संघर्षपूर्ण प्रयास से यह मुक्त हुआ। न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय की अध्यक्षता में शासन द्वारा पाँच सदस्यीय कमेटी गठित की गई है। संस्थान के निदेशक को संचालक मण्डल का संयोजक सदस्य बनाया गया है।

गोपाल चतुर्वेदी भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष

उत्तर प्रदेश शासन से सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी को भाषा संस्थान का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया है। मुलायम सरकार में कवि गोपालदास नीरज इस संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष थे।

अमेरिकी सीनेट में वेद मंत्र

1978 में स्थापित अमेरिकी सीनेट (वाशिंगटन) में गुरुवार, 12 जुलाई 2007 को पहली कामकाज की शुरुआत हुई 'असतोमा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृत गमय' से। हिन्दू मन्दिर में अंतर धार्मिक सम्बन्ध विभाग के निदेशक और हिन्दू पुजारी राजन जेड ने यह प्रार्थना ईसाई कट्टरपंथियों के विरोध के बावजूद की। संसद सदस्यों की भाषायी सुविधा के लिए प्रार्थना का अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। अमरीकी संसद कांग्रेस के ऊपरी सदन सीनेट के 208 वर्षों के इतिहास में पहली बार सदन का कामकाज हिन्दू प्रार्थना के साथ शुरू हुआ।

मारीशस में जुटेंगे 32 देशों के भोजपुरी भाषी

मारीशस में 26 जुलाई से 31 जुलाई तक 32 देशों के भोजपुरी भाषी लोगों का सम्मेलन होगा जिसमें भोजपुरिया समाज के उत्थान, भोजपुरी भाषा, साहित्य, सिनेमा आदि विषयों पर गम्भीर चर्चा होगी। इस सम्मेलन में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार समेत भारत के कई अन्य प्रदेशों से भी लोग भाग लेंगे।

पाठ्य पुस्तक में गाँधीजी

प्रदेश की शिक्षा परिषदों, शिक्षा मिशनों आदि द्वारा स्वीकृत अथवा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों में शुचिता, मर्यादा तथा निष्पक्षता का ध्यान नहीं रखा जाता। न उनकी गम्भीर समीक्षा की जाती है। कितनी बार ये पाठ्य-पुस्तकें राजनीति से प्रभावित होती हैं, बच्चों के अपरिपक्व मन पर उसका दूषित प्रभाव पड़ता है। उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा अधिकृत पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान, भाग-1, इतिहास और नागरिक शास्त्र पुस्तक में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता शीर्षक के अन्तर्गत महात्मा गाँधी जो देश के राष्ट्रपिता हैं उनको बड़े हल्के ढंग से लिया गया। सम्मान सूचक शब्द प्रयोग करने के बजाय 'दूषित प्रवृत्तियों के शिकार' होने की बात लिखी गई। वास्तविकता यह है कि एक रिश्तेदार की सोहरत में कुछ गलत काम कर बैठे जिसके लिए प्रायश्चित्त स्वरूप उन्होंने आत्महत्या तक करने का विचार किया किन्तु दृढ़ निश्चय कर पिता को पत्र में अपनी भूलों को स्वीकार करते हुए क्षमा याचना की। पत्र में पुत्र की आत्म स्वीकृति तथा निष्कपटता से पिता के नेत्र आँसुओं से भींग गये, पत्र फाड़ दिया। गाँधीजी ने जीवनपर्यन्त अपने चरित्र की उज्ज्वलता बनाये रखी। यह सन्दर्भ बच्चों का मार्ग निर्देश करता।

लज्जा के बाद शर्म

अपने विवादित उपन्यास 'लज्जा' के कारण इसलामी कट्टरपंथियों का कोपभाजन बनकर देशबदर हुई तसलीमा नसरीन अब लज्जा का सीक्वल 'शर्म' लिख रही हैं। लेखन को ही जिन्दगी मानने वाली तसलीमा का यह उपन्यास इस साल दुर्गापूजा तक बाजार में आ जाएगा। तसलीमा ने बताया कि शर्म की विषयवस्तु भी लज्जा की तरह ही कट्टरपंथियों व रूढ़िवादियों को बेनकाब करने वाला है।

ऐसी है हिमाचल शिक्षा बोर्ड की हिन्दी पाठ्य-पुस्तकें

हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने 21 जून 2007 को नई दिल्ली में धूमधाम से अपना 95वाँ जन्मदिन मनाया। इसी के विपरीत हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की कक्षा ग्यारह की हिन्दी पुस्तक अंतराल, भाग-1 विष्णु प्रभाकरजी का जीवनकाल 1912 से 2006 दर्शाया गया है। जीवन परिचय में लिखा गया है ''दिल्ली में स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य करते हुए 2006 में साहित्य जगत से विदा ले गये।''

कुछ समय पूर्व इसी प्रकार आगरा विश्वविद्यालय की पाठ्य-पुस्तक में कमलेश्वर को दिवंगत घोषित कर दिया गया था जबकि वे जीवित ही नहीं बल्कि आगरा के साहित्य समारोह में सम्मिलित भी हुए थे।

ऐसी संवेदनशून्यता है हमारे पाठ्य-पुस्तक निर्माताओं, सम्पादकों में।

आजादी की लड़ाई का पहला अखबार

1857 की क्रान्ति के सिलसिले में जिन अखबारों का ऐतिहासिक अवदान और कालजयी बलिदान है, उनमें सबसे आगे 'पयाम-ए-आजादी' का नाम लिया जाएगा, जो जंग-ए-आज़ादी का एक तरह से मुखपत्र था। इसके सम्पादक क्रान्तिकारी अजीमुल्ला खाँ और प्रकाशक बादशाह बहादुरशाह के पौत्र बेदार बख्त थे। अंग्रेजों की जीत के साथ बेदार बख्त को फाँसी पर लटका दिया गया और जिन लोगों के भी घर में 'पयाम-ए-आज़ादी' की प्रति मिली उन सबको भी मौत के घाट उतार दिया गया।

संगोष्ठी/लोकार्पण

राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम
महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के दूर शिक्षा कार्यक्रम का उद्घाटन

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री विलासराव देशमुख।
मंच पर राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम, राज्य के शिक्षा मंत्री श्री वसंत पुरके,
म०गा०अ०हि०वि० के कुलपति प्रो० जी० गोपीनाथन एवं कुलसचिव श्री अनुप केशवदेव पुजारी

राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा कार्यक्रम का उद्घाटन एवं तमिल के प्राचीन शैव संत सुंदरर की कविताओं का हिन्दी अनुवाद का लोकार्पण विश्वविद्यालय के पंचटीला स्थित मुख्य परिसर में दिनांक 15 जून, 2007 को किया। समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख ने की। राज्य के शिक्षा मंत्री श्री वसंत पुरके मंच पर उपस्थित थे।

इस अवसर पर राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा मैं बचपन से ही महात्मा गाँधी से प्रभावित रहा हूँ। महात्मा गाँधी जैसे महान विचारक, दार्शनिक और उच्च नैतिक मूल्यों के प्रचारक और अनुयायी भारत को ईश्वर का एक अनमोल उपहार थे।

गाँधीजी की माता ने **एक महत्त्वपूर्ण सलाह** दी थी, ''बेटा अगर तुमने अपने पूरे जीवन में किसी एक व्यक्ति की रक्षा की या उसका जीवन सुधार दिया तो मनुष्य रूप में तुम्हारा जीवन और जन्म दोनों सार्थक हो जायेंगे। ईश्वर की कृपा सदैव तुम पर बनी रहेगी।''

जीवन का उद्देश्य क्या है, हम पढ़ाई क्यों करते हैं? हम चाहते हैं कि जब हमारे विद्यार्थी अपनी शिक्षा पूरी कर विश्वविद्यालय छोड़ें तो उस समय उनके सम्मुख काम की समस्या न हो और वे व्यावसायिक क्षेत्र में प्रगति के लिए अपनी पढ़ाई का पूरा लाभ उठा सकें। 21वीं शताब्दी ज्ञान और सूचनाओं के विशाल भण्डार के प्रबन्धन की शताब्दी है। छात्रों को कुशल बनाना चाहिए ताकि वे ज्ञान रूपी सागर को सफलतापूर्वक पार कर सकें। जो ज्ञान और सूचना गतिहीन हो जाता है उसका विकास नहीं हो पाता। किसी भी ज्ञान से रचनात्मकता और नवान्वेषण को बढ़ावा मिलना चाहिए ताकि हम राष्ट्रीय विकास में अपना योगदान दे सकें।

प्रौद्योगिकी का सम्बन्ध केवल विज्ञान से होना ही जरूरी नहीं है यह स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि किसी भी ज्ञान अथवा विधा के विकास के लिए वैज्ञानिक सोच और दृष्टिकोण दोनों का होना बहुत जरूरी है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय स्तर की शुरुआत से ही ऐसा शैक्षिक वातावरण होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में उद्यमशीलता का गुण अंकुरित हो सके। विद्यार्थियों से आग्रह करते हुए राष्ट्रपति महोदय ने कहा कि आदर्श नेतृत्व द्वारा हम सही पथ पर चलकर अपने सपने साकार कर सकते हैं। एक श्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों में सदाचार व निष्ठा की भावना पैदा करनी चाहिए।

ज्ञान, आस्था, शैक्षिक उत्कृष्टता और सद्चरित्र, नैतिक मूल्यों को आत्मसात करना और उनका व्यापक प्रसार करना ही शिक्षा है। प्रबुद्ध और जागरूक नागरिक बनें और दूसरों को वैसा बनने के लिए प्रेरित करें।

पाँचवीं से बारहवीं शताब्दी के दौरान विश्वभर से विद्यार्थी ज्ञान अर्जन के लिए नालंदा आते थे। उस समय नालंदा एक विश्वविख्यात विश्वविद्यालय माना जाता था। क्या हम फिर से ऐसा वातावरण स्थापित नहीं कर सकते? ईश्वर ने आप सबको शायद एक बार फिर यह सुनहरा मौका दिया है। अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता हासिल करें और विश्व के सम्मुख अपनी उत्कृष्टता साबित और स्थापित करें। मुझे विश्वास है महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा शीघ्र ही हिन्दी के एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में उभरेगा।

समारोह के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय छात्रों द्वारा राष्ट्रगान एवं मंगल गीत प्रस्तुत किया गया। मंच पर उपस्थित राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री का कुलपति महोदय द्वारा शाल, स्मृति चिह्न एवं पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रपति महोदय ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जी० गोपीनाथन को किताबें भेंट की।

इस अवसर पर स्वागत भाषण में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जी० गोपीनाथन ने कहा कि आज का दिन इस विश्वविद्यालय के लिए ऐतिहासिक महत्त्व का दिन है। भारत के राष्ट्रपति एवं हमारे विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष का पहली बार इस विश्वविद्यालय में आगमन हुआ है। पिछले साढ़े-तीन वर्षों से विश्वविद्यालय के कार्यकलाप वर्धा से चल रहे हैं और इसको अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व के विश्वविद्यालय के रूप में गाँधीजी की इस कर्मभूमि में विकसित करने में हमारे वर्तमान कुलाध्यक्ष से हमें मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है।

हमारे विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रख्यात शैव संत सुदरर की कविताओं के हिन्दी अनुवाद का लोकार्पण तथा विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा कार्यक्रम का उद्घाटन कुलाध्यक्ष महोदय ने किया। निश्चय ही हमें दूर शिक्षा के माध्यम से भारत के सभी प्रदेशों और विश्व के अन्य प्रदेशों से जुड़ने का सुअवसर प्राप्त होगा। अपने उद्बोधन में समारोह की अध्यक्षता कर रहे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख एवं महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री श्री वसंत पुरकेजी के भी प्रति कुलपति ने कृतज्ञता प्रकट की।

बंद न होने दें अपने भीतर का रेडियो

रेडियो कल अमिताभ बच्चन था, जो आज का मुकरी हो गया है। टीवी के बोझ से रेडियो दबकर हाशिये पर चला गया है, पर इसकी वापसी की गुंजाइश खत्म नहीं हुई है। बस शर्त यही है कि आप अपने भीतर के रेडियो को बन्द न होने दें।

नई दिल्ली के प्रख्यात टीवी-रेडियो लेखक व व्यंग्यकार सुभाष चंदर ने इण्डियन मीडिया कांग्रेस रायपुर चेप्टर और त्रैमासिक पत्रिका मीडिया विमर्श

द्वारा 'रेडियो की वापसी' पर प्रेस क्लब, रायपुर में आयोजित व्याख्यान को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आपके, मेरे, हम सबके भीतर एक रेडियो है। रेडियो मनोरंजन की चाशनी में ज्ञान की खुराक देता है, इसलिए इसकी महत्ता कभी कम नहीं हो सकती। उसके ओज और आनंद को वही जान सकता है, जिसने रेडियो सुना हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे छत्तीसगढ़ वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष वीरेन्द्र पाण्डेय ने कहा कि जब से दिखता रेडियो यानी टीवी आया, सुनने वाला रेडियो हाशिये पर चला गया। टीआरपी के लोभ और विज्ञापन के लालच में टीवी अपना आत्मानुशासन और धैर्य खोता जा रहा है, जिसकी वजह से रेडियो की वापसी का द्वार खुला है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि माखनलाल राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के दृश्य-श्रव्य माध्यम के प्राध्यापक और कई रेडियो स्टेशनों के डायरेक्टर रहे डॉ० महावीर सिंह ने काफी भावुक होकर कहा—हर आदमी के भीतर एक छोटा ट्रांजिस्टर है। एक छोटा रेडियो सोया हुआ है, उसे जागृत करें, खुद सुनें और सबको सुनाएँ। उन्होंने कहा कि रेडियो एक खतरा निरपेक्ष साधन है और पीढ़ी तथा परिवार के लिए वरदान है। इससे पाजिटिव एनर्जी मिलती है तथा यह आंतरिक चेतना शक्ति को जागृत करता है। इससे संस्कार और संस्कृति को खतरा भी नहीं हो सकता।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि छत्तीसगढ़ प्रदेश महिला कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती वाणीराव ने कहा कि रेडियो का एक अहसास, एक रिश्ते का नाम है, जो खेत-खलिहान से होकर चूल्हे-चौके तक अपना समबन्ध कायम करता था।

मीडिया विमर्श वेबसाइट

इंटरनेट और प्रिण्ट माध्यम दोनों पर रायपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका **मीडिया विमर्श डाट काम** (www.mediavimarsh.com) को अमेरिकन वेबब्राउजर कम्पनी नेटस्केप ने उत्तम वेबसाइट घोषित करते हुए प्रशस्ति-पत्र दिया है। यह प्रशस्ति-पत्र सामग्री चयन, प्रकाशन की विषयवस्तु व वेब पब्लिशिंग के आधार पर डी मोज निर्देशिका द्वारा उत्तम प्रकाशन के लिए दिया गया है। नेटस्केप द्वारा मीडिया विमर्श को हिन्दी में मीडिया के सभी प्रकल्पों की पड़ताल करनेवाली एकमात्र त्रैमासिक पत्रिका माना गया है।

'मिस्टर जिन्ना' नाटक की सार्थक प्रस्तुति

हस्तक्षेप के प्रति प्रतिबद्ध रंग संस्था 'विराट कलोद्भव' द्वारा अंधेरी, मुम्बई स्थित वाई० डब्ल्यू० सी०ए० के प्रेक्षागृह में 'मिस्टर जिन्ना' नाटक की प्रस्तुति रंगमंचीय रिद्म में बँधी हुई—न कहीं ढीलापन, न फालतू का कसाव। रंगमंचीय तामझाम और अतिरंजना से दूर, यह प्रस्तुति सादगी के शिल्प में ढली हुई थी। रंग-साधनों से बोझिल हुए बगैर, प्रयोगधर्मी पद्धति अपनाते हुए इस प्रस्तुति में जिन्ना की शख्सियत के विभिन्न पहलुओं को, उसके

मुम्बई में 'मि० जिन्ना' नाटक के मंचन का एक दृश्य

अंत:-बाह्य संघर्ष और साइकी को कलात्मकता से दृश्यों और गतियों में बाँधे रखा गया।

मुट्ठी भर भूख का लोकार्पण

बाएँ से डॉ० सदानन्द शाही, डॉ० केदारनाथ सिंह, डॉ० उमाशंकर तिवारी, डॉ० एम०डी० सिंह, डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक

गाजीपुर के सुप्रसिद्ध होम्योचिकित्सक डॉ० एम०डी० सिंह के काव्य संग्रह **मुट्ठी भर भूख** (विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित) का लोकार्पण 26 जून 2007 को गाजीपुर के रामलीला मैदान सभागार में **डॉ० केदारनाथ सिंह** ने किया। लोकार्पण करते हुए उन्होंने कहा—कवि होना अपने आप में एक उपलब्धि है। कवि का स्वधर्म आत्माभिव्यक्ति है। इसके द्वारा कवि अपने परिवेश को कोमल, संवेदनशील एवं सुन्दर बनाता है। डॉ० सिंह द्वारा रचित काव्य रचना एक अतिस्वाभाविक क्रिया है, क्योंकि होम्योपैथी और काव्य रचना सगोत्री सरोकार है। दोनों मनुष्य के शरीर को उसकी वाइटालिटी के माध्यम से प्रभावित करते हैं। इस अवसर पर डॉ० मुनि देवेन्द्र सिंह की काव्यरचना की चर्चा करते हुए **डॉ० विवेकी राय** ने कहा—लगभग प्रत्येक कविता की पंक्तियाँ उद्धरणीय हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरक बनेंगी। प्रो० अवधेश प्रधान, प्रो० सदानंद शाही, डॉ० पी०एन० सिंह ने डॉ० मुनि देवेन्द्र के कवि रूप का स्वागत करते हुए भविष्य में ऐसे ही संवेदनयुक्त काव्य की अपेक्षा की। लोकार्पण के बाद काव्य गोष्ठी हुई जिसमें स्थानीय कवियों ने काव्य पाठ किया।

काव्य समग्र

दिल्ली सचिवालय में रश्मि मल्होत्रा की 'कविता समग्र' का लोकार्पण मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री गंगाप्रसाद विमल ने की। श्री शेरजंग गर्ग, श्रीमती मंजु गुप्ता व श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी प्रमुख वक्ता थे। नमन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'कविता समग्र' की सभी विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

साहित्य में चार पुस्तकों का एक साथ लोकार्पण-समारोह, बाएँ से श्रीमती व्यंग्य कवयित्री निशा भार्गव, परिचय संस्था की अध्यक्षा श्रीमती उर्मिल सत्यभूषण, सुश्री रेखा व्यास, मुख्य अतिथि श्री गंगाप्रसाद विमलजी, श्रीमती संतोष गोयल

मीडिया विमर्श के वेब मीडिया अंक का विमोचन

जनसंचार के विविध आयामों पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका 'मीडिया विमर्श' के वेब मीडिया पर केन्द्रित अंक का विमोचन अवंति विहार में फिल्मस डिवीजन (सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार) के पूर्व मुख्य सम्पादक डब्लू०डी० साठे (मुम्बई) ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह पत्रिका एक वैचारिक फोरम ही नहीं आन्दोलनों का भी रूप लेगी क्योंकि इसके लेखों में सच कहने का साहस दिखता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ पत्रकार एवं बख्शी सृजनपीठ के अध्यक्ष बबन प्रसाद मिश्र ने कहा कि मीडिया विमर्श पत्रिका के माध्यम से मीडिया जगत में छत्तीसगढ़ की महत्त्वपूर्ण पहचान कायम हुई है। यह मीडिया पर केन्द्रित देश की पहली हिन्दी पत्रिका है जो इंटरनेट और प्रिण्ट माध्यम पर एक साथ प्रकाशित होती है।

पुस्तकालय संस्कृति
श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट पुस्तकालय
लोकार्पण, नई दिल्ली

5 जुलाई 2007

''श्रद्धानन्द सेवा संघ और स्मारक ट्रस्ट के इतिहास में एक नवीन अध्याय जुड़ रहा है। हमारा पुस्तकालय जो काफी समय से बन्द पड़ा था, उसका नवीनीकरण और उन्नयन किया गया है। इस पुनीत कार्य को सम्पन्न कर पुण्यार्जन करने का श्रेय हमारे न्यास-सचिव श्री रवीन्द्रकुमार मदान के श्वसुराल-परिवार को है। मदान साहब के श्याला बन्धु ने अपनी प्रातस्मरणीया माता दिवंगत श्रीमती कृष्णा सहगल की स्मृति को चिरस्थायी करने के सदोद्देश्य से यह सुकृत्य पाँच लाख रुपये की राशि के दान से किया है। इसके लोकार्पण के आप सभी साक्षी हैं।''

इस सन्दर्भ में पुस्तकालय का लोकार्पण करते हुए ट्रस्ट अध्यक्ष श्री सोमपाल ने पुस्तकालय संस्कृति पर अपने विचार प्रकट किए—मित्रों, पुस्तकालय, पुस्तकों को रखने का स्थान मात्र नहीं है। ऐसा होता तो इसे भण्डार या गोदाम कहा जाता। यह तो एक विचार है, अवधारणा है, सिद्धान्त है। इसकी संकल्पना मानव जीवन के आयुचक्रों एवं सन्तति विशेष की देश तथा काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर कालान्तर में अर्जित ज्ञानानुभव के सातत्य एवं उन्नयन के उद्देश्य से की गई।

समूह में रहने की जन्मजात प्रवृत्ति सब प्राणियों में पाई जाती है। मनुष्य भी इसका अपवाद नहीं है। परन्तु उसने इसे सामुदायिक भावना का रूप दिया और उस भाव की सहिष्णुतापूर्ण सामूहिक अभिव्यक्ति हेतु संस्थाओं-समितियों की रचना की। पुस्तकालय भी ऐसी ही एक संस्था है। वहाँ सब समान भावाधिकार से आते हैं। कोई भेदभाव नहीं रहता।

पुस्तकालय की अपनी एक संस्कृति है। पुस्तकें और वाचनालय सबके उपयोग हेतु हैं। उसके अपने विधि-विधान, नियम और आचार संहिता हैं। किस प्रकार प्रवेश करें, पुस्तक प्राप्त करें, बैठें, अध्ययन करें, पुस्तक घर ले जाँय, वापस करें, कोलाहल न करें, अन्यों को असुविधा न दें। इन सबके नियम हैं। बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि पुस्तकालय स्वयं एक संस्कृति है।

स्वाध्याय करने, अनुशासन में रहने और संन्यस्त होने का बड़ा हितकारी साधन है पुस्तकालय। एक विलक्षण अनुभवाभास और अहसास है। आप स्वयं देख सकते हैं कि जब आप पुस्तकालय में प्रवेश करते हैं तो विशेष प्रकार की अनुभूति होती है। मन शान्त होकर प्रेरक विचारों से ओतप्रोत हो जाता है।

मानवीय रुचियों, व्यवहार और ज्ञान के वैविध्य का दिग्दर्शन है, प्रदर्शनी है। कितने सारे विषयों पर विभिन्न भाषा शैलियों में वहाँ पुस्तकें हैं। एक-एक विषय पर अनेक मत हैं। कैसी-कैसी वेश-भूषाओं, भाव-भंगिमाओं और विचारों-व्यवसायों वाले व्यक्ति वहाँ आते हैं। कोई खाँसता है, कोई मठारता है, कोई डकारता है, कोई अंगड़ाई लेता है, कोई जंभाई, कोई शरीर के विभिन्न अंगोपांगों में खुजली और सहलाने का काम करता है। कैसे बोलता है, हाथ, पैर और चक्षुओं के संचालन व इंगितों द्वारा अपनी बात मनवाने का प्रयास करता है। देखिये कितना सीखने को मिलता है और मनोरंजन भी होता है। पुस्तकालय महाराज की कृपा से।

इस प्रकार पुस्तकालय एक वातावरण है, पर्यावरण है, माहौल है। मानव स्वभाव और प्रवृत्तियों के अध्ययन का अवसर है। विचारों और मतों के आदान-प्रदान का मंच है। भौतिक संसाधनों के आवश्यकतापरक उपयोग का जीवन्त मॉडल है। न्यूनतम साधन से महत्तम कल्याण का मार्ग है। सांसारिक वस्तुओं को परस्पर मिल-बाँटकर उपयोग करने का तरीका है। सम्पत्ति के अनावश्यक संग्रह की वृत्ति की निष्फलता का प्रमाण है। 'त्येन त्यक्तेन भुञ्जीथा:' और 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का पर्याय है।

ज्ञानार्जन और विद्यादान का सर्वोत्तम कर्म है। दैनन्दिन कार्यों की ऊब से निवृत्ति प्रदान हेतु सुखद अवकाश है। तनाव से मुक्ति और सकारात्मक चिन्तन का स्थान है। ज्ञानपिपासु जिज्ञासुओं का गुरुकुल है। सर्वविधि-शास्त्र सम्पन्न शिक्षकाचार्य है। देश-काल-विचार की दृष्टि से दूरस्थ जनों से विचार-विनिमय-साक्षात्कार करने बतियाने का माध्यम है। पुस्तकालय की पुस्तकों के माध्यम से आदिज्ञान के प्रणेता-प्रवर्तक ऋषियों-मुनियों से लेकर आज तक के सभी देशी-विदेशी विद्वानों-विचारकों-चिन्तकों के विचारानुभव का कोश।

मनोवैज्ञानिक अवसादों, मानसिक ग्रन्थियों, पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों के विसर्जन की सुरसरि (गंगा) है पुस्तकालय। नवविचारों व नवाचारों के सर्जनोद्भव की उर्वरा स्थली है। सद्‌विचारों, आस्थाओं और श्रद्धा को सम्पुष्ट करने का तीर्थ है। मानव सभ्यता के विभिन्न पथों-पड़ावों तथा परिणतियों से सबक लेकर भविष्य की वीथियों-सरणियों के चिह्नांकन और संधान का मार्गदर्शक द्युति स्तम्भ है। ज्ञानाग्नि में स्नान कर मन की शंकाओं, विकृतियों, व्यथाओं, विशादों के त्याग-शमन-समाधान का मन्दिर है पुस्तकालय। इसीलिये तो वैदिक प्रार्थना है—

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये,
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो,
भूयिष्ठांते नमः उक्तिं विधेम॥

हमारे इस ज्ञान-मन्दिर का इन्हीं भावनाओं से आप सब उपयोग करें। हम सबको अपना आशीर्वाद दें।

हरियाणवी-अंग्रेजी शब्दकोश

ब्रिटिश शासनकाल के दौरान एक अंग्रेजी अधिकारी ई० जोसेफ ने सरकारी अधिकारियों की मदद के लिए लगभग एक सौ वर्ष पूर्व यह शब्दकोश तैयार किया था, जो उस समय प्रकाशित नहीं हो सका। अब इसे हरियाणा इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन ने प्रकाशित किया है। शब्दकोश का सम्पादन हरियाणा अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष प्रो० के०सी० यादव ने किया है। इस शब्दकोश में हरियाणा के लगभग 1800 शब्द हैं, जटिल शब्दों को समझने के लिए दो स्थानीय कहावतों और लोकोक्तियों का इस्तेमाल किया गया है। विश्व हिन्दी सम्मेलन, न्यूयार्क में गयाना के संसदीय कार्यमंत्री तथा राष्ट्रपति के सलाहकार रिपुदमन प्रसाद ने इसका लोकार्पण किया।

पत्रकारिता की आठ पुस्तकों का लोकार्पण

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की बहुआयामी शोध परियोजना के प्रथम चरण में तैयार की गयी आठ पुस्तकों का लोकार्पण भारतीय प्रेस परिषद के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जी०एन० रे० ने दिल्ली में किया।

राजनीतिक पत्रकारिता : राकेश सिन्हा,

आर्थिक पत्रकारिता : आलोक पुराणिक, **भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया** : डॉ० देवव्रत सिंह, **साहित्यिक पत्रकारिता** : ज्योति जोशी, **विज्ञान पत्रकारिता** : डॉ० मनोज पटेरिया, **प्रेस विधि एवं अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य** : डॉ० हरवंश दीक्षित, **फोटो पत्रकारिता** : नवल जायसवाल, **फिल्म पत्रकारिता** : विनोद तिवारी।

विश्वविद्यालय के कुलपति अच्युतानंद मिश्र ने बताया कि विश्वविद्यालय माखनलालजी की कर्मभूमि खंडवा में ग्रामीण और विकास पत्रकारिता के लिए एक नया परिसर स्थापित करने जा रहा है जिसके लिए आठ एकड़ भूमि ले ली गई है। यहाँ प्रकृति के साथ संवाद की पत्रकारिता भी पढ़ाई जायगी।

हिन्दी का पाठ पढ़ेगी सेना

अब तक अंग्रेजी में अफसरों के आर्डर सुनने वाली सेना को हिन्दी का पाठ पढ़ाने की तैयारी की गई है। सेना को आधुनिक टेक्नोलॉजी से लैस करने के साथ हिन्दी को हाईटेक करने का निर्णय किया गया है। लगभग सौ फीसदी तक अंग्रेजी में होने वाले कामकाज को अब ज्यादा से ज्यादा हिन्दी में निपटाया जाएगा। इसके लिए मध्यकमान मुख्यालय से सभी कार्यालयों को बाकायदा हिन्दी साफ्टवेयर के इस्तेमाल के लिए कहा गया है। सेना में अब तक दूसरे पायदान पर खड़ी हिन्दी को भाषा नम्बर एक बनाने की पहल की गई है। इसके लिए हिन्दी को मध्य कमान के सभी कार्यालयों में हाईटेक करने की कवायद की जा रही है। अब तक पिछड़ने वाली राजभाषा को आम प्रचलन की भाषा बनाने के लिए निर्देश दिए गए हैं। मध्य कमान के मेजर जनरल जेएस सिद्धू ने समूचे कार्यालयों को कम्प्यूटरीकृत करने के साथ ही हिन्दी के साफ्टवेयर को इस्तेमाल करने के लिए कहा है।

मेरे ईश्वर

मैं निरन्तर चढ़ा, चढ़ता रहा, शिखर कहाँ है, मेरे ईश्वर
मैं निरन्तर खोजता रहा, खोजता रहा, ज्ञान का भण्डार कहाँ है, मेरे ईश्वर
मैं नाव खेता रहा, खेता रहा, शान्ति का द्वीप, कहाँ है मेरे ईश्वर
हे ईश्वर, मेरे देश को दूरदृष्टि और मेहनत से आनन्द प्राप्ति का वरदान दो।

—डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम

आपका पत्र

आपके विद्वत्तापूर्ण सम्पादकत्व में सम्पादित व प्रकाशित 'भारतीय वाङ्मय' का हर अंक विगत कई वर्षों से मुझे नियमित मिलता रहा है, जिसके लिए हम आपके अतीव आभारी हैं। 'भारतीय वाङ्मय' सिर्फ महत्त्वपूर्ण एवं दुर्लभ सूचनाओं का संवाहक ही नहीं, हिन्दी साहित्य के उत्कर्ष में उसकी एक मिशनरी भूमिका भी है। इस पत्रिका ने आपके समर्पित हिन्दीसेवी मनीषा व्यक्तित्व को व्यापक फलक प्रदान की है और आपके श्रद्धालु प्रशंसकों की जमात क्रमशः बढ़ती जा रही है। आपकी यशस्विता में उत्तरोत्तर वृद्धि हो, यही हमारी कामना है।

'वाङ्मय' के मई-जून 2007 अंक में सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं साहित्यकार पं० शान्तिप्रिय द्विवेदीजी के विषय में डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्रजी का आलेख पढ़ा। लेख बहुत रोचक और सूचनात्मक है। विदित है कि पं० शान्तिप्रिय द्विवेदीजी का पूर्व नाम पं० मुच्छन दूबे था। डॉ० मिश्र के अनुसार दूबेजी का नया नामकरण पं० रामनारायण मिश्र ने किया था। किन्तु स्व० रायकृष्णदासजी के अनुसार श्री दूबे का नया नामकरण पूज्य महामना मालवीयजी ने किया था। इस सन्दर्भ में एलबम में रायकृष्णदासजी का लिखा विवरण यहाँ द्रष्टव्य है, जो महामना मालवीय फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित 'महामना के प्रेरक प्रसंग' ग्रन्थमाला के खण्ड-1 (एच०बी०) में पृष्ठ 112 पर संकलित है।

उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षाधिकारी का नाम था, नैपाल सिंह। एक बार वह महामनाजी से मिलने आये। आपने उनका नाम पूछा; उन्होंने उक्त नाम बताया। आपने कहा नैपाल क्या? तुम्हारा नाम है—नेहपाल सिंह। तब से वह अपने नाम का यही रूप बर्तने लगे। बनारस में एक सुयोग्य अध्यापक थे। पंजाबी सारस्वत ब्राह्मण होने के कारण उनका नाम था, निक्का मिश्र; उन्होंने हिन्दी क्षिप्र-लेखक पद्धति निर्मित की जो वैज्ञानिक, परिपूर्ण, साथ ही सरल भी है। जब महामनाजी ने उनका नाम सुना तो उसे निष्कामेश्वर मिश्र कर दिया, जिसे मिश्रजी ने सादर स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार हिन्दी के अपने ढंग वाले एक ही आलोचक और साहित्यकार स्व० शान्तिप्रिय द्विवेदी का नामकरण भी महामनाजी का ही किया है, उनके सौम्य और विनम्र स्वभाव के कारण। उनका पूर्व नाम था, मुच्छन दूबे। विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय में एक क्षत्राणी नर्स थी; सिताबो देई। वह निःसंतान थीं; अपना समस्त अर्जन उन्होंने विश्वविद्यालय को इस निमित्त अर्पित कर दिया कि इससे एक आवास बना दिया जाये, जिसके किराये की आय योग्य क्षत्रिय विद्यार्थी को छात्रवृत्ति के रूप में दी जाये। महामनाजी ने यह दान सवात्सल्य स्वीकार करते हुए उनसे कहा—''तुम सीता देवी हो; सिताबो देई नहीं। तुम्हारे दान से निर्मित मकान का नाम होगा 'सीता-निवास।''

—उमेशदत्त तिवारी
महासचिव, महामना मालवीय फाउण्डेशन
महामनापुरी, वाराणसी-5

गुजर गया वह जमाना, मई-जून 2007 के अंक में महादेवीजी और पन्तजी के साथ आपके दर्शन हुए। यह कितने सौभाग्य की बात है कि अपने ही समय ऐसी-ऐसी पद्म विभूतियाँ थीं। 1976 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर मैं भी अपने परिवार के साथ इलाहाबाद गया था। मेरा तो शोध का विषय ही 'पन्त और सुन्दरम्' था। दोनों के साथ घण्टों तक हम बैठे थे। पंकज मल्लिक का गीत याद आ रहा है—

गुज़र गया वह ज़माना कैसा-कैसा।

—डॉ० रजनीकान्त जोशी, अहमदाबाद

'भारतीय वाङ्मय' का मई-जून का संयुक्तांक कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इसमें भारतेन्दु पूर्व की हिन्दी के बारे में नई जानकारी दी गई है तो पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी को याद कर उस विस्मृत साहित्यकार का समुचित मूल्यांकन नई पीढ़ी के पाठकों के लिए उपयोगी है। महादेवीजी तथा पन्तजी के साथ मोदीजी का चित्र तो मैंने अपने साहित्यिक-सगर्व संरक्षित किया है। इसी अंक में पन्तजी के काव्य को कूड़ा कह कर नामवरजी ने जो अपनी अनोखी अभिज्ञता का परिचय दिया है वह सचमुच अनावश्यक, अनौचित्यपूर्ण तथा जायका बिगाड़ने वाला है। इस प्रसंग में आपने प्रो० चन्द्रबली सिंह, डॉ० बच्चन सिंह, ज्ञानेन्द्रपति तथा डॉ० पी०एन० सिंह की जो सम्मतियाँ उद्धृत की हैं वे नितान्त उचित हैं। पन्त के काव्य को कूड़ा कहना सचमुच आपत्तिजनक, असंसदीय तथा असाहित्यिक है। यदि कोई कवि किसी दर्शन विशेष को काव्य में अभिव्यक्ति देता है तो इससे काव्य न तो कमज़ोर होता है और न उसे तृतीय श्रेणी का समझना चाहिए। सूर के काव्य में पुष्टि मार्ग की दार्शनिक अभिव्यक्ति है तो तुलसी के काव्य में विशिष्टाद्वैत की छटा देखी जाती है। सच तो यह है कि पन्त ने अपने काव्य में अपने युग की सभी विचार-पद्धतियों को समेट लिया है।

उनके छायावादी काव्य के प्रति तो छायावाद के मुखर आलोचक पं० पद्मसिंह शर्मा तथा पं० रामचन्द्र शुक्ल जैसों ने कटूक्ति नहीं की। नारी मन की करुणा और पीड़ा को यद्यपि महादेवी ने संवेदनायुक्त अभिव्यक्ति दी किन्तु मानव तथा प्रकृति को समीप लाने में पन्त ने जो प्रयास किया वह अद्भुत है, अप्रमेय है। आज भी पचास से अधिक वर्ष पहले बी०ए० में पढ़ीं उनके गुंजन की पंक्तियाँ स्मृतिपत्र में कौंध जाती हैं। 'छाया' का मानवीकरण—

कौन कौन तुम परिहत वसना म्लान मना भूपतिता सी
वातहता विच्छिन्न लता रति श्रान्ता ब्रज बनिता सी।

देखें या 'नौकाविहार' में गंगा तट के इस रम्य दृश्य को देखें—

सैकत शय्या पर दुग्ध धवल,
तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रान्त क्लान्त निश्चल।

अथवा 'परिवर्तन' में प्रयुक्त शब्द सम्पत्ति की विराटता को देखें।

पन्त ने ही युगान्त और युगवाणी लिख कर प्रगतिवाद के आगमन का स्वागत किया। ग्राम्या के ग्राम्य चित्र 'ग्रामवासिनी भारतमाता' का चित्र प्रस्तुत करते हैं और उनका खींचा ग्राम्य चित्र टेनिसन के डेजर्टेड विलेज की टक्कर का है। यह भी निश्चित है कि यदि महादेवी ने नारी के अन्तस्तल को उद्वेलित करने वाली अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है तो पन्त ने अपने काव्य का फलक व्यापक रखा है। डॉ० प्रदीप जैन को प्रेमचंद साहित्य पर वरिष्ठ फैलोशिप मिलने का आपने उल्लेख किया। इन्होंने सीताराम चतुर्वेदी के संस्मरणों से परिपूर्ण स्मृतियाँ (जन्मशती ग्रन्थ) का सम्पादन कर उस महान साहित्यकार को उचित श्रद्धांजलि अर्पित की है।

—**डॉ० भवानीलाल भारतीय,** जोधपुर

'भारतीय वाङ्मय' पत्र ही नहीं, पूर्ण समालोचना है। यह पठनीय के साथ-साथ संग्रहणीय भी है। ज्ञानवर्द्धक सूचनाओं से समृद्ध इस पत्र के पिछले जुलाई 2007 अंक में पंतजी पर उठे विवाद का भी ब्योरा है। पंतजी पर टिप्पणी करने से उनका महत्त्व कम नहीं हो सकता। पन्तजी ने ही कविता को काव्यमयता और कोमलता प्रदान की है।

आप निरन्तर रचनाकारों पर अभिमत प्रकाशित करते रहते हैं, उनका पाठकों पर प्रभाव पड़ता है और वे लेखकों की ओर आकृष्ट होते हैं। 'भारतीय वाङ्मय' किसी प्रकाशन संस्थान का पत्र नहीं प्रतीत होता, बल्कि एक सजग दृष्टि का परिचय देता है। साधुवाद!

—**विश्वम्भरनाथ उपाध्याय,** जयपुर

साहित्यिक पत्रकारिता का मिसाल बनता 'भारतीय वाङ्मय' जुलाई 2007 आवाहनपूर्ण सम्पादकीय महत्त्वपूर्ण साहित्य-समाचारों, पुस्तक-समीक्षाओं, विचार-स्थापनाओं, लघु लेकिन महोपयोगी लेखों के साथ प्राप्त हुआ। महाकवि पंत पर नामवरजी की विवादित टिप्पणी पर प्रो० रामदरश मिश्र का लेख संतुलित और शमनकारी लगा। —**केशवशरण,** वाराणसी

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन की जितनी आवश्यकता है उतनी ही मानसिक स्वास्थ्य के लिए साहित्यिक-सांस्कृतिक ऊर्जा की अपेक्षा है जो मात्र पुस्तकों से ही सम्भव है। दिग्भ्रमितों को दिशादिग्दर्शित करने वाली, अज्ञानियों को ज्ञान ज्योति प्रदान करने वाली, राष्ट्रीय-चेतना की संवाहिका, सांस्कृतिक ऊर्जा का अक्षय स्रोत एवं जन-जन को मानवोचित कर्त्तव्य-कर्म की प्रेरणा देने वाली पुस्तकें ही एकमात्र साधन हैं जो सभ्य समाज, सुसंस्कृत समाज एवं स्वस्थ समाज की निर्मिति में सहायक सिद्ध हैं। वैश्वीकरण के इस युग में मानव के सर्वांगीण विकास हेतु बौद्धिक चैतन्यता के धरातल पर पुस्तकें ही काम्यसिद्ध हो सकती हैं। वास्तव में सभ्यता और संस्कृति के सोपान पुस्तकें ही हैं जिसके लिए पाठकों की अपेक्षा है। —**डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय**

अलीगढ़

कहाँ गये ऐसे लोग

एक शाम मैं हिन्दुस्तान टाइम्स की बिल्डिंग के सामने से गुजर रहा था। कस्तूरबा गाँधी मार्ग के बस स्टैण्ड पर मैंने एक शख्स को देखा। वह मुझे कुछ-कुछ पहचाने से लगे। मैं रुक गया। उनसे लिफ्ट के लिए पूछा। वह तैयार हो गए और साथ आ कर बैठ गए। मैंने पूछा, 'क्या आप पंजाब के मुख्यमंत्री थे?' उन्होंने कहा, 'हाँ'। मैंने फिर पूछा, 'आप यहाँ बस स्टैण्ड पर क्या कर रहे हैं? क्या आपके पास कार नहीं है? या टैक्सी?' वह बोले, 'मैं तो बस का इन्तजार कर रहा था। मेरे पास कार नहीं है। और टैक्सी के लिए पैसा नहीं है।' वह पंजाब के कांग्रेसी मुख्यमंत्री रामकिशन थे। कॉमरेड रामकिशन के नाम से लोग उन्हें ज्यादा जानते हैं। कोई सिक्योरिटी नहीं। मेरे मन में उनके लिए इज्जत बढ़ गई। मैं जॉर्ज फर्नांडिज को मुम्बई के वक्त से ही जानता हूँ। तब वह मजदूर नेता थे। वह भी किसी किस्म के दिखावे में भरोसा नहीं करते। वह बिना क्रीज के कुरता-पाजामे में नजर आते हैं। मैं उनसे कई बार मिला हूँ। हालाँकि मैं उनकी राजनीति से सहमत नहीं हूँ, लेकिन मैं उनका भरोसा करता हूँ। कई साल पहले मैंने मनमोहन सिंह से अमृतसर में अपने पिता के चेरिटेबल ट्रस्ट का आगाज करने की गुजारिश की थी। तब वह देश के वित्तमंत्री थे। अमृतसर उनके घर जैसा है। वह चुपचाप आए। कहीं कुछ नहीं था। न पुलिस के सायरन और न ट्रैफिक में रुकावट, किसी को तकलीफ नहीं। मैं उनके अन्दाज से बहुत खुश हुआ था। दूसरों को उनसे सीखना चाहिए।

—**खुशवंत सिंह**

> पुस्तक विहीन घर ऐसे कमरे तुल्य हैं जिसमें खिड़कियाँ नहीं हैं। —**होरेस**

स्मृति शेष

श्री धर्मपाल

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली के संचालक **श्री धर्मपाल** का गुरुवार 12 जुलाई, 2007 को निधन हो गया। उन्होंने सन्मार्ग प्रकाशन को प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों में प्रतिष्ठापित किया। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

साहित्यकार प्यारेलाल आवारा का निधन

चर्चित साहित्यकार एवं उपन्यासकार **प्यारेलाल आवारा** का मंगलवार 3 जुलाई 2007 को निधन हो गया। वे 75 वर्ष के थे। 'दूरियाँ' नामक उनका उपन्यास काफी लोकप्रिय था। तीन पुत्र और छह पुत्रियों के पिता प्यारेलाल आवारा काफी दिनों से बीमार थे।

साहित्यिक जीवन में सक्रिय रहने के साथ वे राजनीति से भी जुड़े थे। उन्होंने हेमवतीनन्दन बहुगुणा के साथ राजनीति का लम्बा सफर तय किया था।

> आम जनता तक पहुँचाये गये ग्रन्थ सम्भवतः बीसवीं सदी के उत्तरार्ध का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विकास है। —**डॉ० राबर्ट एस्केपिट**

नामवर : नामवर

हिन्दी के यशस्वी विचारक डॉ० शुकदेव सिंह ने अपने गुरु डॉ० नामवर सिंह के नामकरण की नयी युक्ति ढूँढ़ी है। उनके अनुसार डॉ० नामवर सिंह के पिता बाबू नागर सिंह जी परम्परा-पालक होने के नाते (क्षेत्रीय गाँव रामगढ़, जनपद चन्दौली में जन्मे) महान संत कीनाराम के भक्त व सन्त साहित्य के रसिक थे। जीयनपुर या आवाजापुर ही नहीं, बल्कि इलाके के सभी गाँवों में संत कीनाराम को ईश्वर की तरह पूजते रहे हैं लोग। उन्होंने रघुपति राघव कीनाराम की पुस्तक 'विवेकसार' से नामवर सिंह का नाम चुना होगा। डॉ० शुकदेव सिंह ने 'विवेकसार' की चार पंक्तियों का उद्धरण देते हुए डॉ० नामवर सिंह के नामकरण के अन्य तर्कों व कारकों को दरकिनार कर दिया है। 'भारतीय वाङ्मय' को दिये नोट्स में उन्होंने डॉ० नामवर सिंह को 'पावस प्रणाम' निवेदन के साथ इन पंक्तियों को लिखा है—

महीं मच्छ, वाराह, कच्छ मैं नरसिंह वेषा।
महीं कल्प मैं वर्ष मास मैं पक्ष विशेषा॥
(246)
मैं सत त्रेता उभयपर[1] कलयुग-चार सँभारकर।
राम किना मैं **नामवर**, सब सुलहत सब घर अघर॥
(247)

1. उभयपर = द्वापर

प्रस्तुति : **एल. उमाशंकर सिंह**

पुस्तक समीक्षा

मुट्ठी भर भूख
(कविता-संग्रह)

डॉ० एम०डी० सिंह

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-558-7

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 120.00

'मुट्ठी भर भूख' अस्तित्ववाद और उपभोक्तावादी प्रभाव को पछाड़ती जीवन की उद्दामता और उसे देखने की एक खास तरह की मंगलमयी दृष्टि है; बढ़ती हुई सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं के बीच परिवर्तन का भी दहकता बिम्बविधान है। **—वागर्थ,** जुलाई 2007

नामालूम रिश्तों का देश
(कहानी-संग्रह)

नीहारिका

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN :
978-81-89498-08-5

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 120.00

यह सुखद आश्चर्य है कि एक नई लेखिका के इस पहले कथा संग्रह की कहानियाँ जल्दबाजी में लिखी गई कहानियों की कोटि में बिल्कुल नहीं आती। इसमें स्थितियों, मन:स्थितियों और अन्तर्द्वन्द्वों का एक अवसादी किन्तु सम्मोहक इन्द्रजाल फैला है जो विचार और भावना दोनों स्तरों पर सोचने को विवश करता है। **—वागर्थ,** जुलाई 2007

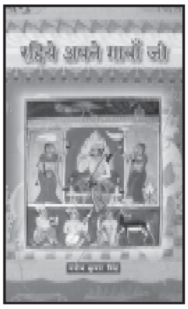

रहिये अपने गावाँ जी

मनोजकुमार सिंह

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN :
978-81-7124-541-3

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 120.00

'गीत-गोविन्द' को लेकर पूर्वी क्षेत्र में ही कविता के माध्यम से साधुता, वैराग्य और पाखण्ड-विरोधी दर्शन की स्थापना हुई। खाना-पीना, उठना-बैठना, घूमना-फिरना, जीवन और मरण के बन्धनों में रहते हुए जीने की कामना के साथ मृत्यु के अटल सत्य पर विश्वास पहली बार कविता का विषय बना। इसकी भूमि भारत का पूर्वी हिस्सा ही रही है। जहाँ देवपूजा के समानान्तर सूर्य की पूजा प्रारम्भ हुई। यह पूजा पुरी से शुरू होकर द्वारका तक जीवन को ही साधुता कहने वाले और कविता को जीवनचर्या मानने वाले सिद्धों के द्वारा पहली बार चिह्नित होती है। आसन, सिंहासन, गादी, पीठ के बिना जिस रचना का व्याकरण, संगीत, सुर, ताल और ऋतु तथा बेला से जुड़ा हो वह गेय पद साधु रचनाओं में 'पद' कहा जाता है। यह संगीतात्मकता ही उसका व्याकरण है, उसका लिंग है, वचन है, कारक है, कारक अर्थात् क्रिया को कराने की क्षमता रखने वाला।

पूरब रंग की तमाम लिखित और मौखिक परम्पराओं के साथ राग और संगीत का सीधा सम्बन्ध है।

कविता, विशेष रूप से पूरब रंग की साधु-कविता सम्पूर्ण अभिव्यक्ति है।

रसों की संख्या

प्रो० वी० राघवन्

हिन्दी रूपान्तर :

अभिराज डॉ० राजेन्द्र मिश्र

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN :
978-81-7124-518-5

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 200.00

'दि नम्बर ऑव रसाज़' नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रो० राघवन् की शास्त्र-वैदुषी का निकष माना जाता है। इस ग्रन्थ में प्रो० राघवन् की प्रतिष्ठा से जुड़े पक्ष-विपक्षात्मक विद्वद्विवादों की सांगोपांग समीक्षा तो की ही है, रसों की संख्या पर भी गहन दृष्टि डालते हुए उन्होंने भोज एवं हरिपालादि-अभिमत नये रसों की भी सांगोपांग समीक्षा की है। यह ग्रन्थ नूतन व्यभिचारी भावों की शास्त्रनिष्ठता पर भी गम्भीर मन्तव्य प्रस्तुत करता है। इतना ही नहीं, समीक्षा के अनेक अभिनव वातायन भी खुलते दीखते हैं, इस ग्रन्थ के अनुशीलन से। काव्यशास्त्रीय उदग्र चिन्तन एवं तत्त्वपरक समीक्षा की दृष्टि से यह ग्रन्थ प्रो० वेङ्कटराघवन् का यशोविग्रह प्रतीत होता है।

प्रो० वेङ्कटराघवन् स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत रचनाधर्मिता एवं संस्कृत-प्रतिष्ठापना के प्रकाशस्तम्भ माने जाते हैं। एक लोकप्रिय गहन अध्येता प्राध्यापक, प्रतिभावदात रंगकर्मी, सहृदय कवि, तत्त्वाभिनिवेशी समीक्षक, अनुभूति-प्रवण महामानव, युगसंवेदना के प्रत्यभिज्ञाता तथा देश-विदेश के यात्रानुभवों से सम्पन्न प्रो० राघवन् अर्वाचीन संस्कृत कविता में एक विशिष्ट युग (1940-1980) के प्रतिमान माने जाते हैं। उनका कर्तृत्व विपुल एवं बहमुखी रहा है।

जनसम्पर्क : सिद्धान्त और व्यवहार

डॉ० अर्जुन तिवारी, विमलेश तिवारी

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 978-81-7124-561-1

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 300.00

जनसम्पर्क छवि निर्माण की इञ्जीनियरिंग है तथा जनमत को अपने पक्ष में करने की एक मनोहारी कला है। शासन, उद्योग, वित्त, शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में कार्यरत संस्थान अपनी पारदर्शिता तथा प्रामाणिकता प्रस्तुत करने के लिए जनसम्पर्क जैसे सशक्त एवं प्रभावकारी माध्यम अपनाते हैं। जनसंचार एवं पत्रकारिता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विधा जनसम्पर्क ही है जिसके अध्ययन-अध्यापन हेतु ग्रन्थ अपरिहार्य हो चुके हैं। जनसंचार, जनसम्पर्क, जनमत, प्रचार तथा विज्ञापन की विविध अवधारणा, उनके तौर-तरीके, संस्थान प्रबंधन, ईवेंट प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, गृह पत्रिका प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं पर सोदाहरण तथ्यों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। शासकीय, अशासकीय घरानों पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर, औद्योगिक और निजी घरानों तथा कार्पोरेट जगत में कार्यरत जनसम्पर्क अधिकारी अपने दायित्वों का निर्वहन सफलता-पूर्वक कैसे करें—इसकी विवेचना इस ग्रन्थ में है।

जनसंचार तथा पत्रकारिता पर अनेक पुरस्कृत ग्रन्थों के लेखक डॉ० अर्जुन तिवारी ने स्वस्थ जनसम्पर्क कला पर प्रकाश डाला है तथा श्री विमलेश तिवारी ने आधुनिक कार्पोरेट जगत में जनसम्पर्क की विभिन्न प्रक्रियाओं को प्रस्तुत किया है। लेखक द्वय की दूरदर्शिता तथा लेखन-क्षमता के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ एक उपलब्धि है जिससे संस्थान-स्वामी, अधिकारी, उपभोक्ता, आम जनता तथा जनसम्पर्क अधिकारी अवश्यमेव लाभान्वित होंगे।

अब तो बात फैल गई
वादों, विवादों और संवादों की संस्मरणात्मक प्रस्तुति

कान्तिकुमार जैन

दस वर्षों से संस्मरण लिखते-लिखते संस्मरण कान्तिकुमार की स्मृति में नहीं, धमनियों में प्रवाहित है। धमनियों में प्रवाहित स्मृतियाँ आक्रामक हो जाती हैं किन्तु उनमें व्याप्त संवेदना पाठक को राहत पहुँचाती हैं। अब जब बात फैल गई है तो उसे छुपाना क्या? उसे आप भी जानिए।

मूल्य : 250.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ

(पाँच भाग)

सम्पादक : राकेश मटियानी

प्रकल्प प्रकाशन, 261-ए, मोतीलाल नेहरू नगर (कर्नलगंज), इलाहाबाद-211 002

मूल्य : 2500.00

मटियानीजी को मैं भारत के उन सर्वश्रेष्ठ कथाकारों के रूप में देखता हूँ जिन्हें विश्व साहित्य में सिर्फ इसलिए चर्चा नहीं मिली कि वे अंग्रेजी में नहीं आ पाये। उनकी एक-एक कहानी जिस तन्मयता, लयात्मकता और इन्वालमेन्ट के साथ लिखी गयी है, दूसरे कथाकार वह काम अपने उपन्यासों में भी नहीं कर पाते। उनके पास हम सबके मुकाबले अधिक संख्या में उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। वे भयानक आस्थावान लेखक हैं और यही आस्था उन्हें टॉलस्टॉय, चेखव और तुर्गनेव जैसी गरिमा देती है। अपने पात्रों को उन्होंने जैसी आत्मीय-ऊष्मा दी हैं, वह प्राय: प्रेमचंद भी नहीं कर पाते।

अगर प्रेमचंद के पास पन्द्रह एवन कहानियाँ हैं तो मटियानीजी के पास भी कम नहीं। उसको न पहचानना हमारे समय की भूल है। अपने समकालीनों में वे शीर्ष पर हैं।—**गिरिराज किशोर**

जाट रे जाट

राजस्थानी जाट कथाएँ

राजेन्द्र केडिया

प्रकाशक : वृन्दा प्रकाशन

16 नूरमल लोहिया लेन, कोलकाता-700 077

मूल्य : 250.00

जाट राजस्थान की जीवट संस्कृति के प्रतीक हैं। इस प्रतीक के माध्यम से लेखक ने राजस्थान के लोक जीवन पर आधारित लोक कथा की शैली में जाट-जीवन को विभिन्न कहानियों में उजागर किया है। जाट लेखक का प्रिय चरित्र है। उसका कथन है—''एक जाट ही है, जो अपनी जमीन कभी नहीं छोड़ता, चाहे अकाल हो या शुकाल, अपनी धरती पर डटा रहता है, अपनी माटी को अपने पसीने से सींचता रहता है। हमने राजाओं और सम्राटों के वंश के इतिहास लिखे और पढ़े, धरती और माटी का इतिहास कभी नहीं लिखा, अगर लिखा होता, तो उसका नायक जाट और किसान होता।'' 'जाट रे जाट' में छोटी-बड़ी 36 कहानियाँ हैं। प्रत्येक कहानी जाटों के पुरुषार्थ और और कौशल का वर्णन करती हैं। अनेक राजस्थानी कहावतें, मुहावरे, राजस्थान की ठनकती भाषा और वैसे ही पात्र। कहानियाँ इतनी रोचक साथ ही ज्ञानवर्धक और प्रेरक। प्रवासी राजस्थानियों को पढ़कर अपने राजस्थान की जीवन्त-संस्कृति से परिचित होना चाहिए। इसके पूर्व राजेन्द्र केडियाजी की दो पुस्तकें—'तीसरा नर' और 'जोग संजोग' हैं जो राजस्थानी समाज की आर्थिक और ओजपूर्ण संवेदना को व्यक्त करती हैं। आधुनिकता के परिवेश में लुप्त होता राजस्थान अपने अतीत को खोता भूलता जा रहा है। राजेन्द्रजी अपनी रचनाओं में विस्मृत को स्मृत कराने का सफल प्रयास कर रहे हैं।

कहानियों के शीर्षक

सांड, जाट और ससुराल, जाटनी और हाकम, उलटी खीर, जाटनी और हाबू, जाट और पढ़ाई, स्याणा, जाट और बावळिया, जाट और सूअर, राखणी-चुकाणी, जाट और रावराजा का हाथी, ऊपर आसी जिको मारसी, गैर हाजर, जाट कहे सुण जाटनी, मैं खाऊँ सुण जाटनी, मैं खाऊँ सो तू खा, छेड़-छाड़, जाटनी और भूत, जाट रे जाट, कुआँ, बट्टे खाते की रकम, जाट और झाउड़ा, जूतियाँ, जाट और पण्डित, जाट और गुरु, काळी कामळी, प्रेम बड़ा कि पकवान, बातों के कारीगर, अनोखी बात, जाट और ढोली, जाट और ताळा, सासू का मारा, अपनी-अपनी घरवाळी, जाट और दस्तूर, अठीनै-बठीनै, गरज दीवानी गूजरी, किस्मत की बात।

डॉ० वागीश शास्त्री की तीन पुस्तकें

प्राचीन विद्याओं और व्याकरण के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० वागीश शास्त्री की तीन नवप्रकाशित पुस्तकों में भी भाषाशास्त्र, वेद, वेदान्त, पुराण, योग व इतिहास का मिश्रित निकष मिलता है। **'जागतिक प्रेम और शाश्वत आनन्द'** पुस्तक में जागतिक प्रेम के लगभग सभी पक्षों पर विचार किया गया है। बाल्यावस्था और किशोरावस्था की मनोवैज्ञानिक काम्य ग्रन्थियों को खोजने के साथ-साथ 'वेलेण्टाइन डे' की बखिया उधेड़कर रख दिया है शास्त्रीजी ने। इस पुस्तक की कीमत है तीन सौ रुपये।

दूसरी पुस्तिका **'त्रयंबकं यजामहे'** डॉ० वागीश शास्त्री की व्याख्या है। 15 रुपये की इस पुस्तिका में महामृत्युंजय मंत्र की सहज भाषा में सर्वग्राही व्याख्या की गयी है। गहरे अर्थों को समेटती इस पुस्तिका के माध्यम से डॉ० शास्त्री ने सम्भवत: पहली बार महामृत्युंजय मंत्र की व्याख्या आम भक्तों के लिए प्रस्तुत की है।

तीसरी पुस्तक है **'एक सनातनी : जर्मनी में अड़सठ दिन।'** अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के सर्जक व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति पा चुके डॉ० वागीश शास्त्री ने वर्ष 2003 में की गयी दो-मासी जर्मनी यात्रा का लालित्यपूर्ण एवं रोचक लहजे में वर्णन किया है। जर्मनी यात्रा के दौरान इन्होंने वहाँ के लोगों को योग व संस्कृत का प्रशिक्षण दिया। जर्मन लोगों के खान-पान, रहन-सहन व व्यवहार का सटीक वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। विशेषकर एक सनातनी हिन्दू का निर्वाह दो माह तक वहाँ कैसे हुआ जहाँ लोग धोती कुर्ता नहीं पहनते और मांस-मदिरा का बेहद सेवन करते हैं। यथा स्थान चित्रों का भी प्रयोग है। 50 रुपये मूल्य की यह पुस्तक मनोरंजक तो है ही ज्ञानवर्द्धक भी है। सभी पुस्तकों का प्रकाशन वाग्योग प्रकाशन, वाराणसी से हुआ है। **—एल. उमाशंकर**

हिन्दू इतिहास

कुंजबिहारी जालान

सूर्य भारती प्रकाशन,

2596, नई सड़क, नई दिल्ली-110 006

मूल्य : 200.00

हिन्दू इतिहास में प्रलयपूर्व भारत से लेकर त्रेताकालीन भारत के इतिहास का साक्षात्कार है। इसमें कुल 21 अध्याय हैं। प्रलय के पश्चात अयोध्या के प्रथम राजा वैवस्वत मनु, त्रेताकालीन भारत के चौदह चक्रवर्ती सम्राटों एवं प्रमुख राजाओं का इतिहास तथा त्रेतायुग की प्रमुख प्राकृतिक घटनाओं का यथोचित उल्लेख है। अनेक प्राचीन नगरों, प्रदेशों तथा राज्यों की उत्पत्ति तथा निर्माणकर्त्ताओं का इतिहास भी इसमें पढ़ने को मिलेगा। शोधार्थियों की ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिए प्रस्तुत अति विशिष्ट है।

राग-विराग

लेखिक : **रश्मि मल्होत्रा**

मंजुली प्रकाशन

पी-4, पिलंजी सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110023

मूल्य : 60.00

सुपरिचित कवयित्री रश्मि मल्होत्रा पिछले कई दशकों से हिन्दी तथा पंजाबी भाषा में रचना करती आ रही हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनकी कविताओं का नवीन संग्रह है। जिसमें त्रिवलियों के माध्यम से 'प्रेम' के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया गया है। इनके मूल में एकाकीपन की गहन पीड़ा है, प्रगाढ़ प्रेम की अलौकिक अनुभूति कराती हैं तथा मर्म को छूती हैं।

यशपाल का कहानी संसार

एक अंतरंग परिचय

डॉ० सी०एम० योहन्नान, तिरुवनन्तपुरम् (केरल)

लोकभारती, इलाहाबाद-1

मूल्य : 160.00

प्रेमचंद के बाद यशपाल अत्यन्त लोकप्रिय कथाकार रहे हैं। केरल भार इवानिकोस कालेज में रीडर श्री योहन्नान को यशपाल साहित्य का अध्ययन करते समय लगा कि यशपाल मलयालम के क्रान्तिकारी कथाकार केशवदेव के समक्ष हैं। पुस्तक पाँच अध्यायों में विभक्त है। यशपाल ने : जीवन और व्यक्तित्व यशपाल का रचना संसार, कहानियों का अंतरंग परिचय, उपलब्धियाँ और देन, कथा उपसंहार। क्रान्तिकारी जीवन और प्रगतिशील विचारधारा के सन्दर्भ में यशपाल के कथा साहित्य का विस्तृत एवं गम्भीर अध्ययन इस पुस्तक की विशेषता है। यशपाल की रचनाओं के अध्येताओं के लिए यह महत्त्वपूर्ण कृति है।

पुस्तकें प्राप्त

1857 का स्वतंत्रता संग्राम : डॉ० कन्हैया सिंह, वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, मूल्य : 130.00

आधुनिक कविता : सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य : डॉ० कन्हैया सिंह व डॉ० राजेश सिंह, वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, मूल्य : 130.00

पूर्वी उत्तर प्रदेश के सन्त कवि : डॉ० कन्हैया सिंह, वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, मूल्य : 130.00

श्री विद्या : उपासक : डॉ० राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी, प्रकाशक : श्री विद्या भवन, कुआ गली, मथुरा, मूल्य : 300.00
डॉ० राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी की इस आध्यात्मिक पुस्तक में ऋषि-मनीषी, सिद्ध-साधकों की अद्भुत लीलाओं का तो वर्णन है ही सिन्धु से हिमालय तक के बीच निरन्तर विद्या-साधना करने वाले साधकों की तल्लीनता व प्रखरता का भी उद्घाटन है। सच्चे अर्थों में ऋषित्व की प्राप्ति श्री विद्या के उपासना से ही सम्भव है।

पातञ्जल योग : सुरेन्द्र शंकर आनन्द, प्रकाशक : स्वयं लेखक, मूल्य : 200.00
इस पुस्तक में अष्टाङ्गयोग पदच्छेद, अन्वय और भाषा टीका सहित समाहित है। सूत्रों को समझने के लिए प्रश्न व उत्तर का सहारा लिया गया है। योगशास्त्र का आरम्भ व योग की परिभाषा, चित्त की वृत्तियाँ, अभ्यास व वैराग्य, विवेकज्ञान और कैवल्य सहित अनेक जिज्ञासाओं को शान्त करने में यह आध्यात्मिक पुस्तक सक्षम है।

गंगावतरण : किशोरीलाल व्यास की कविताएँ, प्रकाशक : इंदूर हिन्दी समिति, हैदराबाद, मूल्य : 100.00
आठ लम्बी कविताओं के माध्यम से डॉ० किशोरीलाल व्यास ने यह कहने का प्रयत्न किया है कि गंगा एक नदी ही नहीं, चेतना की धारा है। भारतीय जीवन विधान, चिंतन-मनन-दर्शन, अध्यात्म, लौकिक व लोकोत्तर जीवन, लोकाचार, संस्कृति, प्रकृति व विकृति सभी का निदर्शन करने वाली जीवन रेखा है गंगा। काशी के विद्वान कवि डॉ० उमाशंकर चतुर्वेदी कंचन की काव्य पुस्तक 'गंगा' के समानान्तर यह संग्रह भी गंगा को व्याधियों से बचाने का संकल्प लेती दिखती है।

इस्क दरियाव : डॉ० किशोरीलाल गुप्त, प्रकाशक : अभिनव प्रकाशन, झाँसी, मूल्य : 50.00
'रसरासि' श्री कृष्ण हैं। रसरासि के इश्क दर्याव में उन्हीं कृष्ण की लीला का वर्णन है। रसरासि के अध्ययन हेतु यह लघु पुस्तिका (इस्क दरियाव) काफी सहायक सिद्ध होगी।

गँवई मन के शहरी अनुभव : सरजू तिवारी की आत्मकथा, प्रकाशक : सत्यवाची न्यास, गाजीपुर, मूल्य : 150.00
छः पर्वों में विभक्त इस पुस्तक में वरिष्ठ समाजसेवी व विद्वान् सरजू तिवारी के जीवन से साक्षात्कार होता है, जिसमें संघर्ष की कहानी तो है ही उच्च आदर्शों से लैस महत्वाकांक्षा, प्रगतिशील साहित्यिक व रचनात्मक चेतना भी है।

घुटन : डॉ० स्वर्ण किरण, प्रकाशक : मिथिलेश प्रकाशन, आरा (बिहार) शखा सोहसराय (नालंद)-803118, मूल्य : 125.00
डॉ० स्वर्ण किरण ने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखनी चलायी है। इनके गज़ल संग्रह 'घुटन' में विषय वैविध्य है लेकिन मूल में समाज है। इनकी गज़लें नयी जमीन तोड़ने में समर्थ हैं।

आकांक्षा : डॉ० मंजु दलाल, प्रकाशक : सुकीर्ति प्रकाशन, डी०सी० निवास के सामने, करनाल रोड, कैथल-136027 (हरियाणा), मूल्य : 100.00
प्रस्तुत उपन्यास के केन्द्र में स्त्री-विमर्श है। मूल कथानक भ्रूण हत्या पर केन्द्रित है। वास्तव में यह उपन्यास स्त्री द्वारा स्त्री मन:स्थिति पर स्त्रियों के लिए लिखा गया है तथा ममता, प्रेम, करुणा जैसे संवेदित भावना से ओत-प्रोत है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 8 अगस्त 2007 **अंक : 8**

प्रधान संपादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)